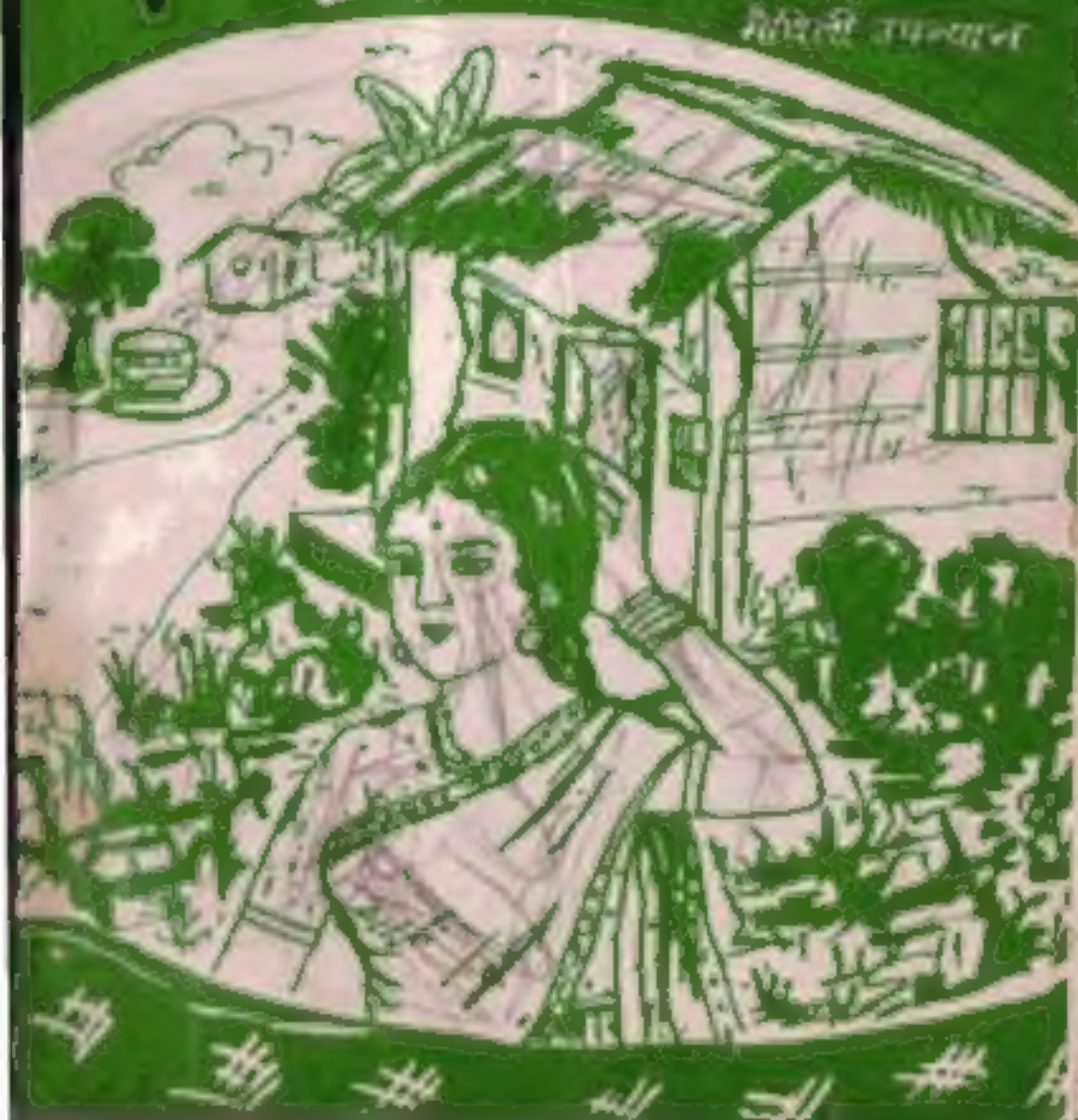


मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत

# सुमति

मैथिली उपन्यास



मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत उपन्यास

## सुमति

प्रीति लोचन देवी मानद संसार  
जगत् में रही जगत् ।  
योगेश्वर जीवन्मुक्ति  
12.11.66

Chandra //

सम्पादक

डा० रमानन्द झा 'रमण'

लेखिका

डा० रमानन्द झा 'रमण'

उपेक्षी प्रकाशन

पटना-६

सुमति (मैथिली उपन्यास) मुंशी रासबिहारी लाल दास

सं० डा० रामानन्द झा 'रमण'

Sumati (Maithili Novel)-Munshi Ras Bihari Lal Das

Ed. by Dr. Ramanand Jha 'Raman'

प्रथम संस्करण-१९१६

द्वितीय संस्करण-१९२६

प्रति-५००

मूल्य-१० रुपये

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

मुसलहपुर,

पटना-८०० ००६

मुद्रक

पूजिमा प्रिंटर्स

मुसलहपुर,

पटना-८०० ००६

## 'सुमति'—मैथिली साहित्यिक रत्न

—प्रो० श्री रामानन्द मिश्र

मैथिली उपन्यासिक विकास-यात्रा एहि सताब्दीक प्रथम दशक में प्रारम्भ होइत । एतहि प्रारम्भमे एहि विधानक रुपरेखा जोतिक स्पष्ट नहि छल तेँ एतदभिन्नक लेखक लोकनि उपन्यासमे कथा एवं वर्णन-विन्यास दिस बेसी ध्यान देल । वर्णनमे अतिरिक्तताक भावा विरोध रहल । किन्तु अगले लेखक लोगनि अपन अपन सामाजिक कुरीति दिस देल तथा ओकर निराकरणक दिशामे अपन लेखनीकेँ अन्वेषण कएल । काबू तुल्यपति मित्र, धीरूणा दाबुर, प० बसोदेन झा 'अलमोदन', प० जीबछ मिश्र, रास बिहारी लाल दास आदि मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यासकार लोकनि अपन लेखनी में मिथिलाक विभिन्न सामाजिक समस्याकेँ उजागर कएल । ओ रचना सब प्रकाशमे आएल किन्तु ओकर उचित मूल्यांकन ताहि समयमे नहि भए सकल । ताहि दिन भाषाक एहेन रचना दिस प्रचुड़ पाठक लोकनिक ध्यान तानि केने नहि सकल । फलतः ओ रचना सब विस्मृतिक गर्भमे चल गेल । साथ अपन मैथिलीक पाठक ओहि रचनाक विषयमे किछु जानए चाहैत छल तेँ पीढ़ीक अनुपलब्धता बहुत बाधक बनि जाइत छन्हि । एही वदंस्वे मैथिलीक ओहेन-ओहेन रचनाक पुनर्प्रकाशनक डॉ० रामानन्द झा 'रमण'क प्रयास परम स्तुत्य अछि तथा ओही कड़ीक ई प्रकाशन 'सुमति' एक जेब बिक ।

रास बिहारी लाल दासक 'सुमति' जाहि समय अर्थात् १९१० ई० मे प्रकाशित भेल छल ताहि दिनुक समयमे मिथिलासभक पाछाँ लोक अपन सर्वस्व नष्ट कए गेल छल । भविष्यक विनु चिन्ता कएने विवाह आदिक करार पर एतित में बहुत बेसी खर्च कए देल छल जाहिसेँ ओकर जीवन-आगत अत्यन्त दुःखमे भए जाइत छल तथापि ओहेन समयकेँ छोड़ब ओकरा







'मुमतिक' प्रकाशन १९१० ई० में भेल । ई पोथी महाराज रमेश्वर सिंहके समर्पित अछि । एकर मूल्य अछि ६०० आना । पुस्तक प्राप्ति के स्थान में लिखल अछि—श्री रामनाथ तथा श्री विरिधारी जाल दास, मिथिला दर्शन कार्यालय—सी० भंडी, पो० मधुबनी, निवा दरभंगा । 'मिथिला मिहिर' उद्गार १४०-४१ वर्ष १९१६ ई० में 'मुमतिक' समासोचना निम्न प्रकारे अछि—'भंडी जाल निवासी मुन्नी श्री राम विहारी जाल दास राखै एक सानाबिब 'मुमति' नामक उपन्यास प्रस्तुत भेल अछि । ई उपन्यास देखी बोध्य अछि । एक-दू पृष्ठ देखलसँ चित्तमें लगेक अहसास कईछ जे स्थान, भोजन, सब काज त्यागि समस्त पुस्तक पढ़ि जाइ । 'मुमति' में विवाहक सिद्धान्तक बरिजातक विशेष कीतुकदुस्त कया अछि ।

सहस्रौना दामक पुत्रक विवाह मनोरथ जाल दासक कन्या सँ भेलन्हि ताहिमे सहस्रौना दाम श्री मनोरथ जाल दास वृन्नु समर्थ मनोरथपूर्ण बरिजात मजि-प्रजि विवाह करौलन्हि, जेतुक देवाक सँ कबे नहि हो । विवाहक गोष्ठा बहुत भेल । तत्काल वृन्नु समर्थकेँ यगो पूर्ण भेलन्हि । किन्तु पश्चात् एही विवाहक श्रृंग ईन-ईत नवैरथाना भेलन्हि । जाहि घर कन्याक विवाहमे अनेको महत्त्व दामा दास-जमादामे छिन्हि गेल, ताही घर कन्याकेँ अन्नी घर भेटव कहियन भइ गेल ।

राम विहारी जाल दासक बाल्यकाल बरि देशमें सम्राट मुघरक आग्यो लख नरमोदकमें बरि पढ़िनि गेल छल । दोसर दिन राष्ट्रीय स्वाधीनताक लागि कमला लेब भए रहल छलैक । मुघरवादी आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतनाक प्रभु सँ मिथिलाप्रांतो अवभाषित रहि रहल । ओही मुघरवादी आन्दोलनक परिणाम भेल अखिल भारतीय नैचिल महासभा । तत्कालमें व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक-निराकरणक उपायक तर्क 'महासभामे नियमित रूपेँ होइत छल ।' साहित्यमे विचार परिवर्तन करैवाक अनेक क्षमता छैक ओहि समयमें प्रबुद्धनमें अपरिचित रहि छलाह । प्रो० गंगापति सिंह (१८६४ (१९६६) साहित्यक एहि प्रयोजनक प्रसंग लिखल अछि—'नाटक, उपन्यास

जादि सरल विषय रहने ओहिसेँ मनोरंजन सेहो होएतन्हि आओर अनेक प्रकारक उपदेशो प्राप्त होएतन्हि । बीस-बीस पन्चीस-पन्चीस विवाह कए जातिकेँ कलंकित कएनिहार बिकीला लोकनिक अन्तमें जेहन पाप-परिणाम होइ छैनहि, ते प्रत्यक्ष देखितहि छी । किन्तु, यदि एहि विषय पर सरल तथा मनोरंजक नाटक वा उपन्यास कोनो विद्वान लिखनि तँ ओहि सँ समाजक बहु उपकार भए सकैत अछि । तखन बीस एहन-एहन दुष्कर्म करवाक साहस नहि करत ।' ('मिथिला मिहिर' १५ नवम्बर, १९१२ ई०) । मुन्नी रामविहारी जाल दासमे सामाजिक चेतना पर्याप्त छल । वैवाहिक कुरीतिक दुष्परिणाम सँ बृह पक्षकेँ उपदेष्ट देखि व्यक्तित्व भेल होएताह । एकर माय-बापक विवाहमे अनेक अर्थ भेल छल, तकरहि सन्तानकेँ विसरि जाइत देखने होएताह । समाजक ई स्थिति एक संवेदनशील व्यक्तिकेँ निश्चित रूपेँ प्रेरित करवा भेल पर्याप्त अछि ।

सुन्नीश्रीक कथन एकटा व्यापक सामाजिक विषय-वस्तु छल । ओकरा ओ समाजक समस्त प्रस्तुत करव चाहैत छलाह । हुनका साहित्यक विभिन्न विधाक शास्त्र्य आ सीमाक ज्ञान छलनि । उपन्यासक अर्थ ओ से नहि जानैत छलाह, जे बाबू तुलापति सिंह 'मदनराज चरित उपन्यास' सँ बुझैत छलाह । अपन अनुभवक अभिप्रायित्व भेल उपन्यास विधाकेँ स्वीकार करवाक प्रसंग लिखने छथि—'नव मण्डलरस गद्यनादिक दर्शन तँ महजमे वसुधातहि सँ भइ सकैत अछि, परन्तु भू-मण्डल गन्तव्यकान्त्य चरित्ररूपी तत्त्वक निरीक्षण तँ उपन्यासकपी आध्यात्मिक (भदमाक) अवलम्बन सँ समाजगत गुण प्रकट लागि-सामिक चरित्ररूपी मजबूत सूत्रय लागत तँ कहि सकैत छी जे समाजकपी कोनोक्षमक रेकर्ड, गन्तव्यकपी छोटी कमराक नैम, समलगत चरित्रक विराडार अर्थात् अलखन, समाज सुधार तथा चरित्र पठनक आदम तथा भावार्थ उपन्यासक धिक । अतएव, सामाजिक उपन्यासक पठन सँ अनुभव महजमे अपन दृष्टि चरित्रकेँ सुविचार सँ परित्याग कए सकैत अछि ।' उपन्यास की बिक, वा उपन्यासक कतेक महत्त्व अछि मुन्नी राम विहारी जाल दासक एहि विचार सँ स्पष्ट अछि ।



वैचित्र्यपूर्ण जीवन आरम्भिक उपन्यासकार जीवन विषय (१८६४-१९२४), जनार्दन झा 'जनसीदन' (१८७२-१९४१) तथा सुश्री राम बिहारी लाल दास (१८८२-) में एक विस्तृत साम्य अस्ति, जे तीनू बड़े पहिले हिन्दीमें लिखि क्योति अस्ति कएने छलाह । ई सर्वेविविध अस्ति जे वैचित्र्यपूर्ण विषय काल सङ्गन्धन से परिचित भेला पर जीवन विषय हिन्दीमें नहि लिखबाक अवसर लेल । राम बिहारी लाल दासक पहिल पोथी 'मिथिला दर्शन' हिन्दीमें प्रकाशित भेला पर मातृभाषा दिस हुनक ध्यान गेलनि । ओ ई अनुभव कएल जे तब उपन्यासक मूल मातृभाषाक उपन्यास चिक । जीवन विषयक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६ ई०), जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु' (मि० मि० १९१४ ई०) तथा पुस्तकालय १९८४ ई०) एवं राम बिहारी लाल दासक 'सुमति' [१९१८ ई०] में 'निर्दयीसासु' तथा 'सुमति' वैवाहिक समस्या पर अस्ति । 'रामेश्वर'क समस्या भूख, बसाव, गरीबी भ्रष्टाचार एवं मानवीय कलहाक अस्ति । प्रथम दू उपन्यासक अपेक्षे 'सुमति'क कलेवर पैघ अस्ति तथा पात्रमे विविधता छैक । किन्तु, निबन्ध शैलीक भाषा तथा पैघ-पैघ भाषा संरचनाक कारणे 'सुमति'क सिलप भा भाषामे ओतेक सहजता नहि अस्ति, जतेक 'निर्दयी सासु' वा 'रामेश्वर'मे पाठक अनुभव करैत अस्ति ।

'निर्दयी सासु' तथा 'सुमति' दूनु स्त्री प्रधान रचना चिक । परंतु निर्दयी सासु'मे जनक पुत्र पात्रक व्यक्तिगत अत्यन्त गौण अस्ति, 'सुमति'मे ओ स्थिति नहि छैक । 'निर्दयी सासु'क यशोदा भूक अस्ति । बिना एको शब्द बजने सभ किछु सहैत जाइत अस्ति । परंतु 'सुमति'क सुमतिमे नामगुण पूर्णतः चरितार्थ भेल अस्ति । सासुरवासन पूर्वहि सुमति गुलजिता भए जाइत अस्ति । सासुर सेवापर आधर्यक पूर्ण प्रदर्शन अपना हाथमे भए पतिक उदार कर्त्ताक बाद ममाजक उदार हेतु सक्रिय भए जाइत । अतः रचनाक मोड़-झुकाव जतेक प्रकार भा स्पष्ट रूपमे 'सुमति'मे व्यक्त भेल अस्ति, ते स्पष्टता 'रामेश्वर' वा 'निर्दयी सासु'मे नहि अस्ति । 'सुमति'मे उपन्यासकार एक पात्र उचितवक्तारके अने छवि जे बीच-बीचमे दीर्घ आइत अस्ति ।

श्री० जयकान्त मिश्र ज्ञान इतिहास ग्रंथमे 'सुमति' चर्चा ना लिखे-कएने छथि । बाबू पीढ़ीक इतिहासकार लेल 'सुमति' विषयक ज्ञानक ओएह भाष आधर भेलैक । पोथी पढ़ि लिखबाक अवसर प्रायः पोथीक अनुपलब्धताक कारणे नहि भेलैक । श्री० राजाकुमार चौधरी (१९२४-८२) ए सर्वे ऑफ वैचित्र्य सिटरेचर'मे 'सुमति'क उल्लेख अवसर कएने छथि । मुदा जर्मन अस्ति मूल पोथी बिना पढ़ने-से भाव एक उदाहरण से स्पष्ट भए जायत । सुमति विक्रम मनोरम नामक कन्या वा सहस्रोभा बाबूक पुत्रवधु । मुदा डॉ० मिश्रक इतिहासमे मुद्रण-दोषे सुमति भए गेलीह सहस्रोभा बाबूक बेटी वा मनोरम नामक पुत्र । एहि अक्षुब्ध दोहरावत श्री० राजाकुमार चौधरी लिखत—'When the heroine Sumati daughter in law of Manojath labh arrives, she manages things so well that the fortune of the family takes a better turn.' कहनाक तात्पर्य जे वैचित्र्यपूर्ण आरम्भिक उपन्यास जकां 'सुमति' सेहो पहल नहि भेल अस्ति । चर्चाक का विमोचक स्थिति से बाधमे बंदैत अस्ति ।

हमरा एहि बातक प्रसन्नता अस्ति जे वैचित्र्यपूर्ण चारि बोट आरम्भिक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६-जीवन विषय) 'निर्दयी सासु' एवं 'पुनर्विवाह' (१९१४ वा १९२४-जनसीदनजी), तथा 'सुमति' (१९१८)के सौजन्य ताकि कथामे लफट भेलै । ओहि प्रसंग समय-समय पर लिखि साहित्यानुसारी वैचित्र्यपूर्ण ज्ञान आकृष्ट कएल । अनुपलब्धके सुलभ करैकामे सफलता भेटल आहिर्न वैचित्र्य भाषा वा साहित्यक प्रसंग पसरल कतेको भ्रातृक निराकरण अभय भेल अस्ति । ई उपन्यासकार लोकनि अथवा एहि वर्षक अन्य साहित्य-कार वैचित्र्यपूर्ण साहित्यिक परिवारक बरेभ एवं ज्ञानः स्मरणीय पुरस्कार चिकथि । हिनका लोकनिक साहित्यिक अवदानसे प्रत्येक पीढ़ीक भाष उठल जाइत । मुदा अपन पारिवारिक जीवनक अक्षमता से कृष्टि किछु एहनो लोक हमरा लोकनिक बीच छथि जिनका अपन बाप-पितामह अथवा पुरस्कार लोकनिक अवदानक चर्चे पर लड़की लागि जाइत छथि । अनोचित होइत



रचनाओं का यह समकालीन एहन कोनों प्रकाश कृतका निरर्थक समेत छवि तथा विवेचन प्रतिपादनमें दुष्ट कुटिल जालोन्तल यंत्र भेदित छवि । मोहन कुटिल का कुटिल व्यक्तिके रास बिहारी लाल दासक प्रमुख कवि 'सुमति' क पुनः मुद्रणमें ही 'जाता सतिजाबाद' केर में स्थापित होइत अनुभव होति है हम बचक लाल विमल धनु ।

'सुमति' सम्पादनका काममें सबसे पहिले मोन पड़ैत छवि त्व० काशी लाल झा 'किरन' (१९०६-१९०६) ने पोषी मुख्य रूप रास बिहारी लाल दासक प्रथम लिखत गेल प्रेरित बरल । कनेको अन्य योजना कने एही काकमे पण्डित श्री गोविन्द झा, श्री० श्री आनन्द मिश्र तथा डॉ० श्री गोकुल लाल झाक वैचारिक सहयोग भेटल अछि । पत्नी श्रीमती बलपता झा पूर्वाहिक कनेको प्रकाशन कने 'सुमति'क प्रेम करी लेवार कर बहनेन बरल । श्री राजनन्दन लाल दास (कचमिल, बलकला) एवं श्री जगदायक लाल दास वैचारिक सहयोगन स्मारक पुस्तकालय भुवनेश्वरी मुंशीजीक पारिवारिक परि-  
षदक सुचना देल । एहि सब व्यक्तिक प्रति हम अपन हार्दिक आभार प्रकट करैत छी ।

अन्तमें हम अन्तरी मासक मासिक प्रति अपन समक अधिक करैत छी ने मुंशी रास बिहारी लाल दासक अलिखित काहीकुमार दास (१९०२-४८) गुणदान लाल दास भा हरिनन्दन ठाकुर 'चरोह' (१९०८-४२) नव साहित्य-कारके अन्य देखक चाहि से पोषणी साहित्यक श्रीमति मोरेंक अछि । मुदा सबसँ बेसी प्रभावकारक बात छवि अरुंधी प्रकाशनक अग्रिमता श्री गोपीबन्धु झा के मिथिलाक साहित्यादिन बीक-बलुके प्रकाशनमे प्रति अपन साहित्यिक आ साम्प्रदायिक धरोहर से काबुक मोरके परिचित अरुंधी लाल मोर दासि त्वर छवि ।



पटना

कोशीबारा

डा० रमानन्द झा 'रमण'

१८-१०-४४

## समर्पण

प्रकाशक गुणदायक आर्थिक प्रवर भूगुर लाललाला मुलकाय प्रकाशक मान-  
नीय सम्प्रदायकाधिराज मिथिला श्री १०८ श्रीमान रमेश्वर सिंह बहादुर  
की० गी० भाद० ई० के० पी० ई०क पाणि शरोरुहमे सादर समर्पण ।  
श्रीमान ।

मैथिल्यनुदक मौखिकीर मिथिलाप्रियति परम पुण्य श्रीमान शिवकुं ।  
अमृत मैथिली भाषा साहित्योद्योग एक लक्ष शिखित रूप सुमति ई  
'सुमति' मुमन श्रीमानक कनवीर कर कमलमे सादर स्थापित अछि । मैथि  
'सुमति'क मुख्य साहक एकमात्र श्रीमाने शिवकुं । अला श्रीमानहिमे  
अपनीका से सम्पर्कके सुमति कृतक होकरेक ।

सबश्रीमानुगृहीत  
रासबिहारी लाल दास



## भूमिका

हम 'मिथिला दर्शन' के भूमिकामे कहि ब्रयलहुँ अछि जे पाठक महोदयकेँ उक्त ग्रन्थ यदि किञ्चित् कदाचित् रोचक तथा लाभदायक होयतन्ह तो हम परम उत्साही भै कोनो नवीनोपहारक सहित् गुणग्राही पाठकक सेवामे पुनः उपस्थित होएब । हमरा एतबो आशा नहि छल जे हमर मत अष्टु अपेक्ष प्रत्यक्ष कम्पेरियहुँ केओ अपलोक्त करत। किन्तु—“अरे सनेह लखन पर करहीं। गिरि मित्र धारन सवा लूण धरही। अलहि मगल बोलि कहै केन। अंतत घरनि घरत छिर रेन ॥” ऐही धारणा सौं विद्योत्साही गुणग्राही विद्या-विवेकी पाठकक साकार तथा महानुभाव सम्भावक समालोचनाक चमत्कार सौं मिथिला दर्शनक हजारो प्रति समस्त भारतवर्ष, बांग्ला, नेपाल तथा इंग्लैंड प्रदेशमे हावोलाब धुः उड़िबाब भेल। कियेक कहि ? “कारर रास गारि लभ स्वाभी। रास सुधार अंतरवासी ॥” जेहि पर कृपा करहि जन जानी। कवि उर अखिर नचावहि पानी ॥” किन्तु एतेक भेलहुँ पर सनेह कहक पड़ैत अछि जे आहि वैधिक समाजक हेतु उक्त ग्रन्थक रचना स्वतः गेलि ताहि वैधिन समाजमे उपरोक्त ग्रन्थक आवर स्थलमे भेल। इहो होएब उचिते किदेक सौं ई सत्य जे ‘मणि माणिक मुला कवि सौमी।’ अहि गिरि गज गिर मोह न सैसी।’ रूप किरौट सकी तनु पाइ। जहि सुषा सोभा अधिकार तेसहि सुकवि कविन बूध कहहीं। उपजहि अत अत अवि नहहीं ॥

अस्तु, हिन्दी भाषानुरागी रसिक तथा प्रेमी पाठकक प्रोत्साहन सौं हिन्दी भाषाक उन्माद ग्रन्थ रचनाक परमाशितापी भेलहुँ। किन्तु मैथिली भाषाक रसिक कतिपय विबुध मित्र महाशय अनुरोध करय लगलाहे जे निज मातृ-भाषाक उन्नतिमे सब उन्नतिक मूल होइत अछि। अतएव जेहि बेर मिथिला भाषा साहित्येक सेवन करय परमावश्यक थीक। हमरा लभक आधुनिक

सांसाजिक वसा परम नवीनता भै प्राप्तिकेँ चरति अछि, तँ जेहि बेर मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचना रहू, जाहिसेँ समाज पर अपूर प्रभाव पड़ैक।

अतएव, हम हस्तगत ‘सुमति’ उपन्यास रचनाक विवेचना पर उद्यत होइहुँ। किन्तु जे हम साहित्याचार्य, जे काव्यतीर्थ जे सकरले अर्थात् किछु कहि केवल निरक्षर भट्टाचार्य। तत्काल कोन योग्यताक दलें समाजक सुयोग सेवाई भै सकथ। अस्तु, जेही लक्ष्य-विकासक साधनमे तैरावताक आभास आशित होबय लागल। किन्तु जेही सर्व-वितर्कक आक्रमणमे जगजगती सौं वैधिनिक असुकरता सौं निरास हूबयमे किछु आशाक आंकी बर्तनक अनुभव होइत। तत्काले स्फुरण भै जाएत जे अतसाकाशमे समपति तथा मेकसो सौं अपन-अपन सामर्थ्यानुसार बिचरैत सवि। तँ हमहुँ जेही बचाचार पर यथा-सक्ति मिथिला भाषा साहित्यकाशमे परिश्रमक प्रयत्न करय अछि। नव लखनस्य नवनादिक दर्शन सौं सहजमे चक्षुपातहि सँ भै सकैत अछि परन्तु कुमण्डल समावाकाशक चरित्रकपी नभयक निरीक्षण सौं उपन्यास कपी आन आतङ्गीक [नवमा] बलसम्बन सौं संगानगत दुष्ट प्रचट साति-सातिक चरित्रकपी तत्काल मुखमे लागत। तँ कहि सकैत सौं जे समाजक सौं कोनोकाएक ईकई, समाजक सौं कोटोकमराक लेला समाजगत चरित्र प्रदर्शनक पासपोर्ट लपटा गाइत समाज चरित्रक विचाधार अर्थात् जनबल समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यास थीक। अतएव सांसाजिक उप-न्यासक पठन सौं बहुध सहजमे अपन वृषित चरित्रकेँ सुविचार सौं परिव्यास कर सकैत अछि। कोन कुतब वा सुकर्मक केहन परिचाम भै सकैत अछि। तँ यदि जेहि ‘सुमति’ उपन्यासक पठन सौं विचारशील उपन्यास प्रिय तथा रसिक पाठक लाभ उठाइत तथा समाजक किञ्चित् सुधार करतहुँ सौं हमर चरित्रक सार्बक होयत। इत्यन्तम्।

अभी

ता. १. ८. १९१८ ई०

सन्वकार

विशेष व्यवस्था

मुन्नाफकन्नी

(सैयिती उपन्यास)

मंशी रासबिहारी लाल दास



छोड़

छोड़

छोड़

## प्रथम परिच्छेद

‘जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना ।

जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना ॥’

जादू बेलाख सुदि पञ्चदशीक ठीकाणिक दुपहरक समय थिक । भगवान् भूवन भास्करक प्रखर प्रचण्ड राशि सौं उज्जरोकृत रीदावल बीजासन बूँह बीन कतेक व्यक्तित मुक्तमण्डल तथा बक्षस्थल पर जौणेशीणी तौनी सी वायुके विकम्पित करैत तथा मुखद विविध गगरीर सेवनार्थ येहि वृक्षक छाया, ओहि वृक्षक छाया तथा येहि दालान नी ओहि दालान दिशि दोड़-सूप काए रहल छथि । विश्वामार्यी वक्त्रिके संतात करैत-करैत दिगमणियो किंचित कालान्तर मे संग्रह्य-देवीक भक्तमे प्रवेश करए लगताइ । सन्ध्यदेवीक भक्तमे पदार्पण करितहि मुघाकर पूर्व नील नभ मण्डलक पथनिका उठाय पंद-पंद समोहर हँसी हँसैत विकसित भेल चल अवैत छथि । सुधासुक्त लालिमा देखितहि प्राची पवनो पिनपिनस लगलाह । बोझ होइत अछि जे अनुत्पित व्यक्तिक अङ्ग-प्रत्यङ्ग सौं विभाकरक अनुतापके ताकि-ताकि कय, बेहारय लागल छथि ।

ठीक ओही अक्षर पर उदय दास पंजिकार कुमार सोनेवालक सिद्धांत दिवसक निर्ययार्थ श्रीमान् कटनोवा बाबूज निज नवनिर्मित सदन पर समागत भेल छथि । जाहि स्थान पर पंजिकार प्रस्तुत छथि से स्थान परम प्रसिद्ध पर-लोकगत संचित निधिक विशाल प्रकाण्ड अट्टालिकावलीक अन्तर्दृष्टि थीक । जकरा देखला सौं अहुजन घरि विदित होइत अछि जे निधि महानुभावक जगज्जनामे उपरोक्त स्थान लपन छवि छटाक अंगि प्रायः राजपसादहक मानमय्यादके तिरस्कार करैत छल होएत । किन्तु, सम्प्रति नून्य मयान तथा अति सोचनीय भए रहल अछि । छिन्न-भिन्न सम्भाव्यदृष्टि पर दृष्टिपात होइतहि दर्शकक सज्जनयन वरवश अश्रुवारि सौं सिंचन करय लगैत छैक ।



वर्चित निधिक बदनक परिपालित व्यक्तिक कृतज्ञ सोचनके, ती मोतीक उपहार देने बिना जोरो नहि रहल जाइत छैक । आम-आम सज्जन-सज्जन पजेबब मोनीरि, कलहु-कलहु सहीरि, आम-आम सोखुइ जाहिमे बीरह-सिधार मानि बनाय बैसल बटनी मारत तथा बीर-भुकी सेलिक अभ्यास करैत तथा कलहु-कलहु कुकरी भगनोन्मुख में भौ-भौ कम चुकैत देखि पड़ैत छैक ।

विज्ञानू पाठक ! श्रीमान सहस्रोला बाबूक परिचय ती अग्रे प्रायः अपरिचित होयब, हेत ! विशेष परिचय परिचय महादय श्री कृष्ण सम्प्रीति पर प्रकाशित करब । किन्तु, सम्पति हम एकेक अवस्था कहब जे हिमक पूर्व पुरान विदु साधारण अवस्थित भौत । बड़े काकी-बाकी, परिधनी, ठोड़ी, मालती, मिठायायी तथा बड़े-बड़े बड़े निपुण, जाहि सम्पति बीबी हजारा टाकाक बापिक आम हाथी-बोहा, नट-नटारी, पाव-नहिहि, लर-मकाक, लोकर-बाकर ती परिपूरित समीप । किन्तु, हेत ! अपन अनुस्मने निपुण अध्यय, पणामोली सरकुट्टक अवस्था तथा हुनके समक सरसाहित्य बापिकार करबे दुर्लभदयक श्रीमान् मदन श्री अहिमैत जे मेस छैब । परन्तु, विद्वानुग्रह से अष्टमिदि कगिनी आठ सन्तान कर्मात् कारि बालक तथा कारि बापिकार श्रीमान्क पुनरमुदय भेलन्ह । बाबूक प्रभुनिक नाम होराभाब, जवाहिरभाब, मोती भाब, मोमे बाब और बालिका विद्वानोहिनी, मदनमोहिनी, कामिनी तथा बापिनी कर्मेन्ह । सहस्रोलापनक साधारणमे पूर्वोक्त क्रिया-कलाप मकसासाक होम मध्य असीमाहुति ईत-ईत बीबी हजाराक आमदनीबला नू-सम्पत्तिके स्वाहा कर देलन्हि । विज्ञान मे आम केतन हजारेकहिक बापिक आम बापि मेस छैन्हि । ओही श्रीमान सहस्रोला बाबूक अन्तिम पुत्र कुमार सोमेनाथक विज्ञान स्पेष्ट बरि श्री अनेकवरर दिन निर्णय कराय पत्रिकार प्रभाव समसमे पाँच मुक्त पुरस्कार प्राप्त कर भाषापुरी प्रभाव करब । तदन्तर श्रीमान सहस्रोला बाबू विज्ञान परिपालक छात्राटक विचारार्थ निज स्मार कुवेरनिधि, रत्नकतिनिधि, बाणिकचन्द्र निधि, पञ्चनिधि, मुकुन्दनिधि परसमगि निधि, पीलराजनिधि, विद्वानिधि तथा

लोकराजनिधि अर्थात् तबीयतिक सब साधन पर ईसल-ईसल परामर्श करब लागल छैब ।

अनुमकी पाठक ! अपने बाबू भावा कनेक देखैत बनू । श्रीमान सहस्रोला बाबू अपन अवशिष्ट सम्पत्तियहुके "कोनविधि से निक्षेप करबा पर कटिबद्ध मेस छैब । निक्षेप करबे करबाह दोसर आम कोन काई मध्य, ई कि कोनो लोकोन पटना धिकैन्हि, वैह की वैह ! अरे कनेक कहबो ती कर केवल हूँ-हूँ कयनहि ती कदरो कृष्ण नहि पड़ैत । अहः अनेक अहनि पर किञ्चित् नहि चढ़ैत अछि ? नहि चढ़ैत अछि ती हमरा ती नून, नहि ती आमा बनू ।

सिद्धान्त-व्याह । बस-बस सन्धिरिक्कणक आम भावा कोनो प्रयोगे नहि । पट्टय उपस्थित से मेस "विधि + वा + अन्त = सिद्धान्त, तथा कि + माह = व्याह । भावार्थ जे सिद्धान्त विचारमे लक्ष्मी से प्राप्त करैत-करैत जासीवन विशेष आह भरैत रहो । ती ? देखी अर्थ दर जे अपनेक लक्ष्य अछि ? बाह ! बाह ! ! अपनेक तीक्ष्ण बुद्धिक ती विमलजला कृष्ण पड़ैत अछि । अपने ती साक्षात् लक्ष्यबुझकहि कृष्ण पड़ैत छी ।

उचितवक्ता दास-जी कहनोत बाबू सोकनि ! विमोहयणे सिद्धान्त विचारमे निपुण मय कयनहि ती केपो सूर नहि कहीलक अछि । देखू गोस्वामी तुलसीदास महानुभाव मदन ठीक कहैलन्ह अछि "जरहि पाहु विमोहवश मार बहहि लर दूध । ते नहि मार कजावही समझि देखू कतिनन्द ॥"

अस्तु ! श्रीमान सहस्रोला बाबू सिद्धान्त विभागक एक विशेष प्रवन्ध रचय लागल छैब । कहनोत बाबू नदैन छीन्ह, श्री बाईजी ! हमरहु सोकनि केही सिद्धान्त विवाहक मारल बीनाहीनाबरबाक पट्टमे पतित से मेस छी तथापि येहनो स्थिति मध्य बजन कोनो सिद्धान्त विवाह करक नदैन अछि, तखन अपना अवस्था के विचारय नहि समैत छी । सेतो-महार बापि जी-आन कृष्ण-कृष्ण हाथी-बोहा, नट-नटारी, पाव-नहिहि, लर-मकाक, लोकर-बाकर ती परिपाल मन्त्रे करैत छी, अपने ती घनादूबे छी, तखन जी अपनेहि नहि करी ती दोसर करबे के करय ?



होते हबुआ अपनेक यन्त्रिने पुन चीक, एकर मिहान्न विराह सभक मिहान्न विराह की विशेष समारोह की सम्पन्न करवीक, जे लोक हँसत नहि । नाहि तो कसबा की हँसबाक बड़ मान होवत ।

जयिउधका शत-की खोपड़ीक गहनितार राजनवनक स्वप्न देखनिहार । बरिवात सजबाक समयमे सभने भिन्ना भादभीम की मृगपतिवहू की मातु करवा पर बाध किसेक मुहूर्त की ? चिन्हारे बही की '... सरेछी कि सोने' ।

प्रिय पाठक ' श्रीमान सजसोला बाबू पद'प पद'प 'पूर्वाभ्युदयक मदन की बहिर्नयन य शशि वसन्ति पुरजन परजनक पेटि शोभीश्रवि की नन्दवक पीरा हाबुनहि जका फुलि उल्लास और कहना'ला बाबू की नमनसाय-कनकसाय कहय नमनसीक- 'भी बहनाय बहो बहनाय और हुब सहसोम प्रसरहि बहोकी की बरिवात पावम पमापम नाकसाक नाकसाक करक पवैत अछि । यदि जका कहये करैत की तो हमरो भाव दोसर कोनो कारणेवना अछि ए नाहि बकर चिला कय । जेन मही मही बाध हुनक बरिवात सावनाक घटा पर जटा जति पदकन जात । यदि अछि नहि तो कम्मी की कम्प फेदत हुनी पकसीन मोटा पाँच नन्दनदिया हुनाहि बरहदरी एक नामगीरा । दल फेदत पर्य बरी-जाजिम हुनाक मिश्र हुनाक तथा पाँचों प्रकारक बाजा की कहकय बाही लखन देखि की अतिरिक्त बहो तक जे जहाँ बहो नम प्रवल कह मकी मे करैत बाबू । उपरोक्त प्रादम्बर पर कहमेस हासक बनक सावेस बाध अछि सकसक कहय लागत छबोन्ह की काकाजी । अपने नमन गलेक करक करईक नमन बेबाग रबाइसेक देखन कोन पूर्वजनक नमनक किक छेकि जे बाकन विपुल करैत छियैक' । नाहि पर श्रीमान सहलोका बाबू कहत लवीक 'नम-वेस भई बहनाय बहनाय जोकमि- 'जम-जम मृगमा बदन बहावा । तामु हुनुन कधि रूप देखावा' कयल कह । बल्लु ' उपरोक्त नमन-अमन तथा नमनन होइत-हुनाइत मिहान्नक विवमी बाध पहुँचि गेल । बड़ा मुहूर्तहि की श्रीमान सहलोका बाबूक मदन पर बरिवात स्वाङ्क सकल सावान अर्न-अर्न सञ्चित होइत लागत अछि ।

बल पुरहु मध्य स्वजन-परिजनक क्षीमाविनी सुबाङ्गना बनिना, स्वपीनता, हैमलता, ललितता सुपीनता वधवा, वञ्चसा वञ्चकता, मनोरमा, ध्यामा, इन्दिरा, मारा सीता-वती, माजनी दरमनो तथा दमनकी प्रमृति बीषा-विनिन्दित स्वर की सारथिक शुभगत करैत प्राङ्गण के प्रमृदत करय भवसीरिहि । देखि मजाजक कनकर की अनुमान हाइत अछि जे भवनक नकीर्णताक बकावे विपुल उल्लास प्राङ्गण की उपलयाय-उपलयाय बाहर बहि बनल । बरिवात मोक्षक एक विशेष विन्यास जे रहल अछि । मीन्य कचराकूट करैत-करैत दियानी इत गन्ध्याक समय विचारपुरक उद्यान मर्याद मिहान्नक स्वाङ्क पर प्रस्थान करय लागत ।

## द्वितीय परिच्छेद मिहान्न

‘कोउ सकहि न करत बहाने,  
लेहि लगी लगन सोइ जाने ।’

श्रीमान सजसोलाबाबूक नृनयन जाइ एक दिन पूर्वाह्न की मिहान्नस्वन के अतिरिक्त कय रहल छैत । करमिण्य नमन्य नमनियाना के निरुपकार कोन एक बीमति लम्बा अंतरावाहना विज्ञान नाभगीरक प्रत्येक भानन की उचरनाक शीन की भावगिन कय ठाढ़ कयलक अछि । अधोभाग के कान-पुन गन्धिन मिन्न कम्पनी तथा भातरक बनावर की बनावर दी गन्धना नमनगी कडकुरयेन (जादिस) की मृगपतिन कय रहल अछि ।

गामाजदोंक अर्थात् मजाजकी दल दम्बर मिहान्न माइत तथा कल-कला औरलज न्यास कम्पनीक पद के सकसविन्यास तथा सावनाक, होरी तथा दिवाजगौर गौर की नामगीर के नमननन हुनक के हुनक कय रहल अछि । महमदाबाद लगीन (नामगीर) कम्पनीक एम्पेट अतिरिक्त















मनो-य नाम-भी भइजी की कहु एक तो गरबल भी धरंकोर  
 कवकांत नहि होइत छने । सोमल साहवा येहने भूताह छने 'कुसुतांक नाम  
 मुनेत मन्त्रा हप्पन (हप्पन) सुमान अहि सुन दोइत धरंकोर अहि । तन्त्र  
 कृपा भी एकेन भी बन्धवाप परिचरनेनक निदिन । तीन भगतक हनु शान्दीनिहू  
 आपन छान । कतक कहन आहीना पर एक योगक सुही दननेह अहि ।  
 अने नाम भी नाम पर विद्यमान छनेह, सिद्ध महि । बरानक एक सुन दिन  
 भवभूतिक हनु इहवातपुर पठकाय देन, स्वीकृत भला पर तो हम कोरा धराने  
 जपवे करितहु । अन्त 'मन्त्र' के भाव साधने की क हिय भवन बरहि बीच  
 प्रीतिपीडी भी एव तीन दिन तकवाच हजामक हने पठकाय दिविक । अहि  
 परकायक अनुभवेन समर्थन भना पर पूर-वाक्यक नामा प्रकारक मध्य-आय  
 पठकाय करत नाम, पर एवने उचरता ह सबहु पाठ-मन्त्र बन्धवान होइत  
 बलाह । मन्त्रपर मनो-य नामा मन्त्राह मगानन भवह और मोक्षकाल  
 मन्त्राकारके । अहि देवीक बलाहन नाक द्वारा काय भगवत ह । मन्त्रान समये  
 नामाभी गोकारिक ना निदिन भी पुन दान ह प्रभुनि । एक विजय मोक्षकाल  
 कथन । दिनमणि ह । की पत्र । उवाट-मुष्टि अन्त-मन्त्र कास्गुन सुन  
 वृत्तिन पुनिता सुन निवाहन भुक्त दिन निषेध कयवेह । वरी दिनक निषेध  
 पर निषेधक मोचन ठाकुर हजामक ह ह बहलानपुर पठवेह, मुहूर्ति नाम  
 होइत-होइत हजाम ठाकुर बहलानपुर भीमान् महलाना बाहु उचरीपर  
 मन्त्रावध भेलाह । हजाम ठाकुर निवारक निर्णय पर लयलार अहि । ई  
 सुन मन्त्राकार सुनिताह पर प्रद भनि हयैकुल भी हजाम ठाकुरक विजय  
 अहनाद भाव लयल छीह । हजाम ठाकुरक सुनमन्त्रक मन्त्राकार हवनीक  
 पहुँचने मन्त्रा कनममिष बरामिनी हनेनि-हनेनि कनमल करेति हवेली भी  
 बहराण मोचन ठाकुर भी कृदाजम पुछय भगवनेह ।

कनममिषा-वी हजाम ठाकुर 'अरे कहु-कहु सममिषीक कुसुतांक कहु ।  
 कनेयां, केहेनि, कनेकटा, बरिवालीक समवा-पीडाक ओरिजीन-बरिजीन नामा  
 की कहु आहीक आहिडान होइत अहि । हमरा हवेलीक नीक तो थाट

दरम दिन सी आहीक बाटावाटी पपीहे मकी तर्कत करी । हमर महलम  
 लोचन भी मनभुवाइन छनि जे बरिवाली तलेक लय कनमन्त्र के कनेया-  
 बाक बाक कहु एक-एकटा कय गोचि लीनहु । केही बेरि भी ओही बूलेक  
 बरि ईतताह ।

मोचन ठाकुर-अब बरामिनी ' कुसुता परमन भी सब सुन बहिपा  
 किन्तु अहीक एकेक मन्त्राक जवाक एकेके बेरि देन तथा अहीक बहवती  
 देवीक मन्त्राह गोकारिक होइत मन कोरा होइत इन कथन लयल अहि ।  
 हमरा मनो-य वहुभा विहू बाजीबुजी आदमी अहिण बलि एवने भी भ-  
 रीन लीन लयल अहि । अन्त उचरताह हजाम अपन कृपा भी उचरनेक  
 ती डि कानो बालक पपीहि करत ? अही उचरता मन्त्राभिन के कानो उचरत  
 लीन लयल अहि । अन्त उचरताह हजाम अपन कृपा भी उचरनेक  
 ती डि कानो बालक पपीहि करत ? अही उचरता मन्त्राभिन के कानो उचरत  
 लीन लयल अहि ।

पाठक ' येनि सुनल विरामक पाठकाय हजामक हजाम उचरत नाम  
 वरिणि अपने के आह आह अहिकार अहि लयल विचारक धूम्रमन्त्र मन्त्र  
 होइत होइत सी परि धुलते पर अपने कनम कनि लीनी बावाजी पेन  
 लय लयने सुनल जाईक लयली आनिता बटनी बुरावा विचरत वहु  
 हमरु यकन उचरताके निषेध देलहु अहि लयन की नीक की अन्त ह हजाम  
 कय भी इति तक करेन चरने की । सुन कनममिषा हजाम के ही कहति  
 छनि ।

कनममिषा-वेन-होइ ' लयलि के इति मन्त्राक कनेये रहय कहवेनि ।

मोचन ठाकुर-अब बरामिनी ' देवक ' आही अपन ती बलि मन्त्राक  
 कनेये रह ।

कनममिषा-दुरी भी ' अही भी बह पठकाय मन्त्राभिन सुनि पईत छी ।  
 वेन-वेन मन्त्र अहि मन्त्राक पर भप्पा कजाय-बजाय भी कनमन्त्र जी कहु,  
 काय हमरु हवेली आहि छी । बी हजाम ठाकुर ' एक बात भी पुछय हय  
 विचारि गेलहु । आह भी अहीक मन्त्रा नीवाहनि के श्राव निराहारे कन  
 कनक पकरीनि या पलाहार करणक हेतु ककरा रात्रि सममिषेह अहि कि  
 इ मन्त्र गोचरी ?

मोचन ठाकुर-मारवाक डेरि'नी रमिताराम हम पहुँचिये जयजैन्, किन्तु एकरन ही जहाँ के हमरा बुझागत मतिवि अम्मावाक विशेष जगद तपित तन-जन ही कएव उचित बीक ।

कममसिया-बी हुआव ठाकुर । हम ही जहाँक बहिनि-विदलीक दाखिन की । छि छिः छिः हुनकई सभ पर जहाँक बोहने भाव-नाथि रहैत जहि ?

जगत कथा कहैत कममस करैत कममसिया प्रत्यागत भेलि और हुआव ठाकुरक हुआवजगीक वार्तालाप नी हुऐली मध्य सभ नी हुआवज-ठाकुरावज जायति । जगतन जोधन सहलोका बाबू जहाँकर हुआव सभना सवास प्रमृति प्रमृति भे भति अतिशय भोज्य पदार्थ मोचन के भोजन कएव जयजैन् ।

भाज्य भावकी के मोचनो ठाकुर जोड़िन मुखमे हृष्य सभसाह जहिना पच्छिम-हा इजमान सानि मिखाइक संश सायुक मुठरा के मुन मे जपुठन ही जलैत जहि । जगु । दुनि-दुनि कय भावन स्वस्थ जलाह । अन्वस्थात् सभहि मोठ परस्पर हाहा-हीही करैत निजा देवीक शान्तिभय कोडक कुच अनुभव करैत जगीत देखाह । जेवमे जगत निजा देवी भिज बोधट पट उदारि जल-पुर प्रवेश कयसैन्हि तवन भीमान् महलोका बाबू हुनक मुखमे सदन ही बहगम स्वजन-पुरजन के हुकारि बिदाइक स्वीकृत पत्र लिखवाय बांधन के बर-विदाइ तथा स्वीकृत पत्र दम बिदा कयसैन्ह । हुआव ठाकुर स्वेष्ट विदाइ की कुमिल होइत सभना सभ भावापुरी प्रत्यागत भेसाह और स्वीकृत पत्र के भनाइक मरकममम ममपेण करैत अपन बूढ़ गोसाह । स्वीकृत पत्र के देवी-देवायन प्रमृति होइत जग की भिज कुलदेवी त्रिपुरसुन्दरी की शान्तिभय वाचन पर समर्पण करैत मङ्गलाचरणक अनुष्ठान करम जयसाह । तत्काले जग भति हुकार पड़ैत । परिजनक लीलाविनी गुनागुनाक सभाके एकचित्त में मोमाउतिन तथा मङ्गल कृष्ण कुम्भाम ही सभ जगायन जवैति गेलीहि । अन्वस्थात् तैक-मिन्दुर पाव-धुङ्गी ली सम्मानित भे भिज-भिज भवन प्रत्यागति भेसैहि । बिदाइ-विजनक निधन देना पर हुँ प्रह की

बिदाइ-कायक भुनि सभसैन्हि । 'एता कह, होमा कह' सप्तस्वर उभय और उठम भावन ।

बिहानु पाठक । आह कनेक जलैत बनू जोड़ु वनमे भूमि-बाधि कय हनि-भुनि बाड जे कोन बिधि कोन भौतिक बिदाइक ठाठ ठाठन जाइत जहि ।

सभ नी जगतन देजन मे भीमान् महलोका बाबू दाखानक प्रत्युपमे ईतव-ईतव गियाह यज्ञक प्रवचन कय रहैत छथि । ज-जे जलैत जलैत दे-मे जलैत जलैत जलैत जलैत 'सरकार' आह उपजेक बिदाइ उमरैत जहि गोन वरकाक बिदाइ दाम मयक बिदाइ दाम नी बहि-बहि तम, बिदाइ नमाराह की सम्पन्न करिओक । जगत कथा भुनि भुनि बीया सभना एम्बर-ओम्बर जगत बाई-कुई क सरकी सरकाय रहैत जहि । मङ्गल यो कहि रहैत जहि- 'सरकार' ई तम सरकार के जलैत कथा कहैत छथि । एतम अपने ई दाम दामर कार्य कोन जयजैन् जहि ?

महलोका बाबू-री बीया । नी कनेक प्रपची ठाकुर निवाही के नी जगत जयजैन् ।

बीया-जैम सरकार । प्रपची के पकड़ने जयजैन् हम हुआवमे हाथिर होइत छी ।

प्रपची-तावेदाह हुआवमे हाथिर भेज । नी हुआव हाथिर कंक ?

महलोका बाबू-ही प्रपची । ली कनेक हुआवमे सोनार मिरहकटुका कयिमा, जेधवा बनिवा के जल पकड़ि जायह ।

प्रपची-जैम सरकार । एतमे कि बीयो गोडा के पकड़ि लवदाक हुआव होइत जहि ।

महलोका बाबू-ई हँ । बीयो जे बीयो बीयो-मसारी हो पकड़ो जग के जयोमे जयजैन् ।

प्रपची-जैम सरकार । सभ के पकड़न डेरि डोरन हम हुआवमे हाथिर होइत छी ।





अच्छि । बाहू-कान्ति ही विवाह-दानमें अष्ट-मंत्र करके एक प्रकारक विधिसे लोक मानि लेलक अच्छि ।

सैयक पुत्र विनिर्गत निराशाजनक काली कनीकूहरमें प्रवेश होइतहि श्रीमान् महलोला बाबूका हृदय बामाहोले होयक लवर्धन्ह । चिन्तामित्र में अल्पक समाप्ताह ।

महलोला बाबू-शाय ' हम नी कहितहि छतहूँ अच्छि के टाकाक हेतु हमसमाजमें सर्व-मन्त्रों पर टाकाक बाइत होइ नी श्रोगक कोलमिया सैयक कदापि नहि छाडत नरक । बेस, री सैयक ' पीली-पट्टारी के वरम् प्रस्तुत होयमाक हेतु काहि बहोक । और मित्र सहायक के बचाव सकहुत ।

बाहू टाकुर-दोस्त ' बाहू कौन तेहन नकाधारण कारण विर्कीक के अपने अममयमें हमर स्मरण कयल अच्छि ।

महलोला बाबू-मित्र ' नरकान्तक विवाहक दिन मिश्रक भी बेनेक । हाकमें कुटिल चिन्ताही नहि । तबन कायक मिश्रहि अपनहीक हाकमें अच्छि ।

बाहू टाकुर-दाइत ' ई सुन-मसाका सुनि बहूँ हाथि लेलहूँ किन्तु बाहू कान्ति नी टाकाक पाव करतरी में रहोज अच्छि । कारण के हमर बहकसा सैयक के कटुका पत्र अपना अपना घरमें लोभाय लेलक अच्छि तथापि मित्रों नी अहाँक मोड़ जनका कोमा बहल करत देनेक । अस्तु ! सञ्जितबाक नाम के पुष्टक छिदीक ओकरा एहि कोलमिया सैयक होमलक तौ अहाँ के अवश्ये देव । कटु कसबा टाकाक अत्यन्तकता परत ।

महलोला बाबू-बायसकता तौ अघाहि । किन्तु मत्काल एक बारहूँ होकरक जाइ । गीत गल जाइ । हम अपनलोक भरोस पर करोव रहैत छी ।

बाहू धर गुरि अवस ह और निम बरनी कोलन कुवनि अर्धान् मन्त्रिकक बाइ नी परामर्श करत लगलह ।

बाहू टाकुर-प्रियकर ' अहाँ के अपन कोलमिया सैयक किहु अच्छि ? बाहकक दिवाइ मिमिल होयक अरन नीना केवक पर उद्यत छि । हमर

सैयक पत्र कर्षकोरक घरमें कसि सेन अच्छि । सैयक बाहर भाइ कयला तौ मेहन बहिया शिबक बाइ जनके हाथ लगलक ।

कौशल्या कुमारी-दीनधन ' हमर लल मन, धन नी वध अपनेहीक उभाहिर पीक नी जाजा हो । हमर कोलमिया कोल मध्य सैयक माइत, चिन्ती, मोट, लल जिनीक प्रस्तुत अच्छि । अहि पत्र पर अलि हो जाइक कयल जाव । किन्तु इत्यक मोल नी नक उठोने कायक एक हुजारी लाइ लल-बाइ मोट हकिदोने जाइ । काजल पत्तल मून पकसा-शकका करत लेव कयल सैयक दान्त के देवन्ह ।

बाहू मोट के छोलीक उठा के कोल कोलाककत का बेसनदार मका अरिजननाम काजल (लेकक) के मल लगीने बाइ टाकुर श्रीमान् महलोला बाबूक सम्मुख उपस्थित भलाह ।

बाहू टाकुर-दोस्त ' सैयक देव तौ स्वीकार कयन्ह किन्तु नहि छि के होय के तौ सैयक अत्यन्तक आहतिव रहि छैन्ह । केवल माके मिनीयति पर जाइ सेहो कीर्तिये-सिवाय कन केवान कय देवाक मानि पडनि छैन्ह । हुनक मांग-मिनीयति पत्र अहिना विहायल व इन छैन्ह । कोलक दला होल-बेनि चिल बने चिन्तित होइत छि । बाहू हुनक अवशिष्ट माइ कति नी बरिष जाइत से प्रकल जगय सैयक देवन्त अर्धान् प्रकल-बेनक अर्धान् अहाँ मित्रबाय मन्त्र के सैयक परिशासनक सीपक भय रहेन्ह, ललक लैका होइ मन्त्राव वेतन्ह । मन्त्रमुक्तमे तीनि सैयक मन्त्राव माइकारी सुद । बाहू हीन जेला पर सुदी सैयक मन्त्राव में सुदक कर सुद बलक । नीन राज है सैयक यदि सधाय नहि सकनि तौ ललकनी मांग ओतनहि सैयक के लल-बाइ के निविदाव उद्यतक नी जाइन्ह । अहि अमिमिष नी बने समयभोत रहि पराधावनक विशेष पकटा करत करतन्ह । लल परिशोधनक होर सुमल अवलक । लल मित्र बाइत के ललकय-क छि मेव । पूर्वोक्त निमम यदि कयल के स्वीकृत हो तौ हम ललकदार तथा कनिबो क सगहि नेने जाइत छिन्ह ।

महलोला बाबू-मित्र ' हम अति अममय छी ललन ' जाइत बाहू न करहि कुकरभू' के मुख्य मानि अहाँ छी करक छोप नहि, ललन जेना के





विदा सेनाज और मोहन साहब रोकाम पर बाय मोन-बातीक माल-साव पटावत लगलाह ।

मध नी पूर्वहि हकनू बपमा मोनारी जैसी, नाति निमर-कोकले मोहन साहू भी बाबु निक बागचीन कय प्रकाशये कहय मगदीक, ही मोहन माह । देखिहह रमन मोनानाच बाबु मोमेनाच छवि बनू । मोहा कोनी नरकक कन्ना मदि बहन बनू ।

मोहन माह-हकनू । नय तो नूव जानते होगे क्या नाम है कि मेरे दुकान-आ मल्ला और चोला नाम क्या नाम है कि लहर मध्ये कहीं दूसरे जगह मिलता न होगा । क्या नाम है कि एक बार पचीस-पचास का नका न मही न मही । एक बार कौन कहे तो बार बीदा मे जाय क्या नाम है कि, बागिस या बागमन्द हो तो महीने रोम पर दायित दे जाना । क्या नाम है कि, मेरे जहाँ रोज़ मसूरी चोला काय होना है । क्या नाम है कि, सभी मही धरनीछ बाबु, हल्ली बाबु, ऐठहू बाबु, रामादर बाबु, हवा नाम है कि, मनोरथ बाबु हमारी का सीमा-बाप्पी मेरे ही दुकान से वे बने हैं । क्या नाम है कि एक बार तुम भी मे बाय । देखा माहू पाँच हजार का नाम क्या नाम है कि पाँच हजार मे बाबु साहिब की दे रहा हूँ । और । क्या नाम है कि एक बार बाटे ही मही । मेल-बाककन हो जाने से फिर तो क्या नाम है कि बाबु साहिब का घर तो मेरा ही हो जायेगा । हम नी क्या नाम है कि, समय मेरे कि, बागन्दे के निय बाबु साहिब का दरबार ही छाया है । एकदमकरी बिज्जम-बुममुन बालीबाय सी मोलाबाब बाबु के मोहि-मोहि कम भावें बारि हजारक माल पाँच हजारके दय तथा सजाय बम्बरी करैत विदा कयलकीक । इहो नृदय मोन-बातीक गहरी अति नाकक सोस रायना छवने सुगकीय होयत बागह बबीन-बबीन बतलोअपुर अत्तावत मेलाह और मोन-बातीक मोटरी भीमाम् सहलोला बाबु के समर्पण करैत निज-दिन निवास स्थान पर प्रस्थान कयलेह । किचित्कामोसराय बीमान् सहलाया बाबु पुन हकनू सोमार के भाङ्गन कय पाँचो हजारक मान-बाती गहन-मुरिया पदकाक हेनु दय देन । हकनू समस्त मेहरी हम्नगल होइतहि हकनू कुनहि अका कुनि उठलाह और तहिलन सी तहकडोले कूकाक बाबु

उर-कारक किचिहमे किरीछान होयत लगलाह । मल्ल्या समय सोमार राज लेबीन सकलेश की मोहन साहब रोकाम पर पुन प्रस्तुत भलाह और कहय मल्लकीन-मोहन भाह । मल्लकी बाया गोका से रसक मलाय सी उमरा सेवा मुखपा करह बनू, माहि नी बनू कान्हिह सोहार मान ठाल मध किचिह मे बीकह बनू ।

मोहन माह-उम-उम क्या नाम है कि, यह बालबाती कपने ही घर रहने को । तुम से भी नूवो का बाबा-बाबा नूव मे है । तुम्हारे सा क्या नाम है कि मे भी कटक बन्द गिरिधारी बाँटे हूँ जो लपके को फोफट मे कलता फिरता हूँ । इस लीदे मे तु क्या नाम है कि तुले नूव ही बाटा लकी है । तुमलोय मो क्या नाम है कि राजदरबार के झोपी कुने लपरे । मेल-मेल मे क्या नाम है कि इट-मुठ लीय झोव, कौन कौन की झोपी ज्जावे रहने रहने । और । अब तुम आ ही गये तो क्या नाम है कि की । मे मन्जोस कपने अपने कोरे निय न ली और । वा नाम है कि तुम विभाके-हिलते नी सो प्यारहू हो जाय ।

मोहन साहू के हकनू हाकनय हिलाय हिमय हाँरि माजिलेह, हृदय मे विभाव नी कौनसे वे मति पन्नीमक अतिरिक्त एक कानी मोहिपा अय मदि कि लकन लकन मारि पचीसो कपेवा के बाकल मटना अका झटकी पिछेन क्या 'चोपक छम कियारे कय जमर फकडा पईन' मकमक-सकजक करैत रिचने बाति सी स्टेशन पर आधारभन्त ।

मोहि निजिमे निजीक से साद-बाती के गलाय-गलाय गल्ली पिचय लग-लाह । कोही रात्रिक कोन कया विचारक दिनहु छरि मोन-बाती मुहेत-दाहैत महीन काटि लेन । मेगकालमे वे किछु महमा मेमारी कयमेहू के कय बसिमूम कमेवरे मलय बाति-गुनि पालिसे बराम दनियाय विदा होमबाक काजहि प्रस्तुत कय कला मल्लन-बरकार । मनेक बान कगार पुननी पर दु-गीभटा महला महिब मेमवार मे सुनमेह, कलीग सन के कोमे ही मेमवार करैत हम नूव मर्याद कासमे सरबसर मरकाक मेबाये कर्मय कय बायेव । ई कथा मुनितहि सहलोला बाबु कोडे मल्लन करैत सोमार रामक विविष्टाचारक व्यवस्था करवा पर उद्यत भेलाह । किन्तु, अतिव समयमे बरिवाती समय बाबु कि सोमार रामक व्यवस्था करबु ।





बेसी टाका जाऊँ विकास कय देन जाइक जे हमहूँ रकम पानी कीनि-बेमरति कय मोड़द करने रही । तखन कि कहे छैक कि यम्मां नी कम्म एक्यो हजार धरि निनाम कय देन जाइक जे कि कहे छैक 'न मया धन्यं करीक' ।

प्रपची—इम्मीवला 'कटुआ के माक पत्रिमुक विषय रहनेक महि किजुल बीमि मेत किछु भगवतक आज्ञा कबजे दय देन जाइक नहि ती बिबाहमे बहु विचाल पड़न । बरियत के समय-तीव धरि कराका रहै छैक । भावतमे मुटि बेवा नी मर अनेने-जिननेने भेल रहन ।

महमोला बाबू—ही प्रपची 'आह तत्काल कटुआ के भोजनमे बाबू ली कीइत सय टाका देनाय बइक हिनाक-किनाय जानी-पका दुनल-मुनल करीक ।

प्रपची—बसह ही जट्ट, बलह । भाव नी जेनीह । हमरा सरकार मन मुसलीक अखि बहाना प्रिये विरलमे केओ भेटलीक । पूरिबल स्वाधेताक बात कहेत-मुनेल निज प्रपंचमे जट्ट के अहेन मोलानायक-रामक प्रपंची पहुँचकाह ।

मोलानाय बाबू—की ही प्रपची की समाचार ?

प्रपची—कृपानिष्ठान 'जट्ट के पनह मय रीया करवाइक राजनी समनल रसवान हेतु सरकार की विकास भेनेक अछि ।

मोलानाय बाबू—बेस-बेस बाह्री मर कमेक देमि जाउ । हम पारिक नदी फिरते लकने चल बसैत छी ।

अहनु 'भीरनरथ बाबू नी भीरनर पाइभूमि नेनह । पम्पर जट्ट के प्रपची कुमुर-कुमुर कहय भगलघोन्ह । जट्ट 'देखत तीहरा हेतु हम कमेक विमण्डा कयसह । आछ हमरे हाइकारना नी तीहरा पनह मीया मरकाय बेसमुठ मछि तहि ती बटाइय मे कुर्लन रहिन्ह । बाबू जे चीय हमरा दय वैह मलम ती 'तमा दाना भान, बीन धिमाय्य जायक' यन करह ।

जट्ट, बनिबा—आए-आए सिपाही बी आए । बाह्री की कहे छैक कि बीइतहिमे जमुनाय मगेत छी, हम नी की कहे छैक कि अनेक कबा नी कहियो कि कपक छी ? बहु गुन गबैत छी अहोक जागि भाइ ती हमरो गुह

बिबाह तखन की कहे छैक कि एवैवा ली पहिमे मोदिआयय चीय तखन की कहे छैक कि बाबा कोनो बातनीत ।

बाह्री मम्पलाये मोलानाय बाबू जईत दृष्टिगत भेलघोन्ह । हुनका बेचितहि छुह मोट अपन-अपन बालीजाय के सटक-बीलायम हयना कयनेन्ह । छुह एवमनीयगत अोनानाय बाबू वही पर ईदकाह जीर मोतक सन्दुकचा की दइटा हजारी छोकरी बाहर कय गए दू स्वयंवर वीर बाबा लगेबसिह किन्तु एवैवा देवाक डेरि दिस्मरणक बाबू पम्पर पाकक स्थानमे मोह पाक दय बाकी स्वयं सन्दुकचमे पुन रहि छैनेन । जईत सन के तीरी मे बान्धि जट्टो भाइ बरक राइत छयनेन हुनके पाक-पाक आबियो बोरि-आएल गेलाह । एवम्पकर हट्टु मित्र-कट्टु जट्ट, कपडाहट्टु पीनी-पवाही बहूमि के देन देवावेन महमोला बाबू के कार्यक प्रबन्ध कय समजाह ।

पाठक 'परप्रव महमोला बाबू के भाव अपन कमेक कय दिघीन्ह शब्द कमेक कयानर मनोरथ नाशक प्रबन्ध ली होन बसैत जाइ । बरियतक मोहना मुनि-मुनि मान ली बहु विचलित भै रहल छथि । मोही बरबर पर मोचन ठाकुर कहय लगनेन्ह की बाबू 'सुब बरक बापे हमरा कहैत रहिमे जे बरियानी हम तनेक मय बसैनेन्ह जे मनोरथ नाशक नांभ (मांसि) बहि बरि मुनाय कयनेन्ह । यहि डेरि नी जाहा अपन मायक मोने बुझाह । से इकर जे अपना बिदा नी कोनो बातक कोनाही नहि हो गेहल प्रबन्ध कय जे मोहो बहि मायापुरी की माके रंगीने जाहि । यदि कोनो बातक टोटा होयत नी बेक भरिमे हुँसी भय बाहनि ।

मोचनक मर्मवेदी कया तथा समसीहन क्षमदान जलित जाया ली पन्ना-प्रव मम्पला कयय लगनेन्ह जाहि कारणे तन्काले यनमे लदेस्वीलक बकाय कयनेन । इय मेही एवा-तानी क मम्पलायमे मनोरथ की दाय जाहि-उपहि विष-हुक स्मारक यन स्मार करय लगनाह नी अपनयक कोनो भाव-विषय नहि रखैनेन्ह । स्मारक एक ओह बापहो हजार ली बाह्र सन रोमैन्ह किन्तु अनेक टाका मोतैन्ह कही ली तकै तलबनी बय कयनेन्ह । पर मम्पलाकि-देरि भयनाह ती बरि-भूरि कय लय-विष



टाका उठाने लगे। बाकी टाका क उपाय की? बोएह—'अण ह्या पूर्व पिबेन् ।'

अन्तु 'मया क्षितिजियत-सेतवारी जे बहो! अनेह जे वम केवला नव-मून कम बारह-सहस्र मुद्रा निराशा रातनक भाय बाया राठन मी अण मेरैह । मेद 'इत्यादिजक शरी राठनो किछु नदन नहि करीलेह । बल्के बाइ ठाकुनक शरी की एकध बाजा केसिम । मुदा हसनन हाठनाह मनोअ-मान भइ नहि कम बिदहक विलोभन करम लगसाह । इअक अलकुनक हेतु एक इह हमारक खान-बाजी खरीद कर हुकूम मोतारक बलिजीत मय मन्तर ठाकु । क देस गरीह । वाम इहेमक हेतु एक दि-हमार टाकाक पहिल भस्कुनाम ठाकु ठेरेक दाकन गेसाह । पस्तार्थिक हेतु एक हमार बाइह लउ अरेसा मय मममनाम गिरहकहु मन्तर भिन मोचन अजिवाधक सोमान पर मन्तरा कइल । खान-नाक निमित्त एक कारिनाय हमार दाक जेह पाकुन वृत्ताय वृत्तहु राय क देन नलह । बायायक जनकनाक हेतु स्वाम स्थान मी राठनी बायाय छलदारी नीमा अमिलना, आरिअ मन्तरजी एकमिन करवाक हेतु धावक मय मयन कयले भल । स्वजन, मन्तर, पुटुअ इन तथा विचजनक समर्थ लेममन पर बठाओल गेल ।

अचिनवकन दाह-दुह मन्त्री भेल एक मधुन । जिअब जिअह कल कयन कइल । पाइल मूनह दुहुक हाल । इर इर जिअक दिईल भाल ॥

पाइल 'उमयप्रद के फफड़-दलानी करेन करेन फफड़न मदि बलदेओ नुस्बारी पण्डि मेनन । माइसे कुमार सोने मानक कुमरन भिकेह । कीमान सहनोलाबाजूक सर कुटुम अन्धु-बाअर धने नाने एकमिन भे मून खरीह । जेम्मेरे कइरा दर्शन श्री मीह जान-नीयर रात-विरमक मन्तर फहारा रहल अछि । सम्पादेवीक भावमक मी पुं कुमरन कण्ड छेने ममारोहक संहित मन्त्रम वेद । राति भरि खान-नाक देनम-डेन नेनम देन मर्षत रहल ।

माइ कसमूक पुनीन पुनीमामी कुमार मोभलानक मुम विकारहक दिन बिदेह ममारोह मी बरिपान प्रस्थानक प्रबन्ध तथा बरिपान भोजनक उवल-पुवन पाक शास्त्रानुसार होय नामन अछि । भय, भान्ध, भेक बोध,

अन्ध, मधुर, तिक्त, कषाय, नाचनिक का निष्ट बट-रस बदर्य लीरमि मी मोचनकालिक रसत रसना विहाय रहल छैल । सम्पूर्ण बहलोमपुर हाथीक पहकार, घोड़ाक हिहिकार होय-डाकना-आफ-ताजाक तबलदोअनि बड़धरी-अभि, तुट्टी-पिपहीक मुरमुरीअनि-पिपीअनि, सहनाई बाधुनीक मिसि-जीअनि, पनोरियोनट मंत्रक (वेनक) कइदोअनि-बिदिजीअनि, दम-दमेटक मदनहाहि धडपहाहि मी इनमनित भे रहल अछि । बारह बरीत-बरीत विहाक चप्पा ठाकल गेल । चप्पाक बजनाद कर्षपुटमे प्रवेश होउन मन्दा बरिपानी-मन्त्रमन्त्र स्थान पर उपस्थित भे मन्त्र-मन्त्र भाय मयाय तिदिम-केसाह । तयमार बरिपान प्रोसेपानक (ममम) हेतु मन्त्र मे रंगल, पंखन-मे-लीम छयल-छवीम मीन्दमणैममम मयपुनम बरिपानीयन मीदि-मादि भय मन्त्रमुनार बाहन के अरमन रहलह अछि । बरिपानीक स्वातृ लभ विधि मी अचि-अचि कब कीमान् खरीतीला बाहुके मन्त्री मी इन्धान रस भायक भेद मंगलानर तहाय पर एकहु कोयक हेतु कोयक भेल तदन्तर भायपुनीक हेतु मिक-मार्च (कीम ममम) करम सागम ।

बहलोमपुर मी बहलोमपुरि मन्त्रम मन्त्रोपासक तागनी (तारी) मुन्दरी-आम करेन मगमल होइत भाया बाया बहल जाइत अचि कीर स्वाम स्वाम पर उभत प्रमदा के बड़-अणम करेन मन्त्रोपासक लैन पायी पण्डा के दान लाम देत साकारेन भायन अचि । मन्त्रक मन्त्रिअनि मन्त्राभिजातीक ध्यान मी केवल विलयन-आदिनी होलन-बाहुनी माराणी मुन्दरीहीक बाइ पचमे लामक छैह किन्तु येहनि प्रमदाक वमनक सीधाय लभेन मन्त्रम परम दुनम कषाणि विजेय ध्यानकष्ट भेल सहलन जाइत अचि । अन्तु 'अन्तिम कषदायक विजेय भाय मन्त्रि मी माइ' भे स्वभक्त के भायपुनीक मन्त्रिपट ल-नाथमे मधुपुनीक मन्त्रम मन्त्रिमे वमन देलवीह । दर्जनक कीमान् प्राप्ति होइतहि उपानक मय निज निज मय के मन्त्रक मन्त्रि हनक मन्त्रमनक मोक्षोपचार करम संगत भेल अचि ।

एक बहल खपीह-पिवा पिवा । दोनर-पुन पिवा ।

दोनर-पावन्नात न भुतमे ।













## पञ्चम परिच्छेद

### परिचय

केवल काम तेहन परिणाम ।

‘यथा करोमि कर्माणि तथैव फलमश्नुते’

पाठक ! केवल विवाह काम ही स्वाच्छन्द नहीं किन्तु विवाह की विधि भारीक क्या कर्माणोत्तरे होयत । विवाहोत्तर कामो भरि नाह-नहि कामे भरि विधीक नाह तो उन्हें बर्दाश्त ई कहूँ वे मातृभरि द्विरागमल काष्ठक इनीची नहि भोजि रहैत छैन्हि तात्काल उभयपक्ष के सोबागरी, पुछारी, पञ्चार्त्त, बटमाचिनी, बधुआचनी तथा तुफारी इतलगमनक सबध पर विपुल व्ययक जतास तान तरङ्गमे डबडूब होयक पडैत छैन्ह । उभयपक्ष विवाह तमातनी सनासनीक आकाङ्क्षमे बहकि-सहकि तीखन तकरारि केरि-केरि बसान्त कम छोड़ैत मन छवि किन्तु विवाह ही विधि भारीक हसियाक दोसर अपाव कोन ? पुनः बनेह ‘अर्थ कन्ना मृत पिबेत् ।’

माय तेव मे मनेन्ह अछि । अचदाना एक दुहु समी पर आम परिवाधनक तकाजा पर तकाजा करैत-करैत अगिदास भेल ; परिशोधनमे केवल टाक मटोल होय समनेक तखन हो मय बटाछति लोकदमा बागमे समसेन्ह और मोकदमाक पैरवी ही पान ही करय मागल अछि । एक के देखैत छियैन्ह के नाबिरक तबनिमे हाजिर तौ दोसर प्यादाक पांकीचीमे पड़ल अछि । तेसर निशाम देखैतक फिकरमे छिन्नत जायमे तौ मुरानह के बाकरैमे पकड़ीबाक चेष्टामे निष्ठा कयने अछि ।

बान्टक विप्राहीक नाम सुनिबहि सहसोला बाबू जीह कटने पुरैत अछि, आनून तौ बहरदशी करताह से परम मयावह भै रहल छैन्ह । घर ही बोनियहि बज्य मदी-मदी परित्याग होइत छैन्ह । प्रवीण प्यादो मजुनै पकड़बाक प्रयत्न मे पकड़ भेल बबलि-बबलि, नूनि-नूनि, छिपि-छिपि बाट मे

दुपि रहलैन्ह अछि । सहसोला बाबू बोरष्टक मय ही नेहन मेव विनय मे रस छवि के जग-जग मे दांती पर दांती मुरते-मुरते मे मुच्छा होइत छैन्ह ।

विप्रमाधस्या मे बेहास-बेहास उठैत छवि और लपट-लपट करै-करै बबैत बेटा लभ पर बाजय नबैत छवि ‘हाय नाम हीरा, सोनी बचावैर, लोभ । जहाँ मयके’ अछैते हमर ई दजा ? बचाव-बचाव, हटाव-हटाव नहि तौ बबलक-पकड़लक कहीन पुन मुच्छाजत भै गजाह । भाँही अन्धकार मे पण्ड निरुन (हाकिया) एक पत्र बय केरैन्ह जाहिमे सोमहरैन नाम सम्पादकाया निर्भरत छवि के आहोवक कला भाषा, चिन्ता जेत अमुक तारीकमे बय कियबतै कथ्य निनाय भेल प्राय २६ दिनक अर्वाधयो अवसान भै गेल अछि जाहि दिन अहाँक ईग्रीकारो आकाशक-कुमुमे छलाह । सेव ! सहसोला बाबू केम्बरहि तर्कल अछि तेम्बरहि तौ विपत्तिक पहाड़ बहराइत देखि पडैत छैन्ह तर्कप्रकारे तौनि कर्णाम्बुने मध्य हुनक मयम सम्पदाक इतिथी भै गेलैन्ह । लोक सन्तापक विषम ऊपर भौ संजय भै सहसोला बाबू माद बपनहुँ देखि दुःखमे प्रसारक सरासाम के परित्याग करैत जाया आमक कदम बढैत अछि ।

हा शोक ! अपाव अपाव तथा सहसोलापनक संसार तौ उकरी परिवार देखैत दिनमे मुजराय भै गेल । देखि परिवारमे बाबू केवल अवाहिरिमान तथा देखि उचन्दाक नायक दानवान अछि रहल अछि । हिनका सम के बर्दाशावे उपवास पर उपवास करैत-करैत पेटमे तेठनि पर ऐठनि पड़ल लग-बैलि अछि । पुनल आता कृपा तौ व्याकुल भै यदि विपु-परिपामित आप-न्यायी घर बुट्मक करणापनी होइत अछि तौ अहिंठाय तौ केवल दुःख-पूर्णतिक पहुँचावे काय के विपुल होयक पडैत छैन्ह, जाहि तौ हिनका मयम हृदयाभ्यस मे अहिनके दुःखहीक बनबटा बान्छादित कयने तब तेव मजिनमे कायमे प्रवेक कयने रहैत छैन्ह । पुनल आताक निदावाहस्या देखि-देखि दीनदबाहु दीनानाथ दस बमीन्दार लीक टाकाक मासिक वेतन पर पटवारिकी मुठि निज केवा मयम मगुप्रह कबलवीन्हि अछि । सेही स्वल्पाव ही बेबावे



जबकि-साम कोनी कराने परिकारन बगल-बोधन करन लगलाह, तब  
 वर्षाभावे मजोरन नोलेकान बागन द्वितीय यात्रा भवावधि नष्टि कर सकन  
 होनि अति । अकर पगल विनाक श्रीव मनन मनन रहनेहु अति ।  
 हेन नोन यात्रा मे कसो ही कम नी दुष्ट जराह नय मदेवा लगनेहु ।  
 पगलोदर पिनाक पूव भिनाह । विधि-भवाहाराह मे म्युनना कोना करलाह  
 आदये लोक हेमि बागनेहु ने अह दोन-हीना-वधावे मासिक महानुभाव मे  
 हि मय मुना नय नय मनुदेवे मासुर विदा कयनेहु अति । मासुर  
 टिकन नी नोमेमान बागन दिनेमे सय नवीन कृति कोरि कय पर उन  
 समयसीहु ।

पाठक । बगलक हाजरीना देखि मेम । भाव कनेक कन्यकसहक बाग-  
 सीनामे मयमसीव होन । हयन पूव परिनिद नयदेव साहके नयन परिपोषनक  
 कला कटी नकन-नकीन बागी कीनि मेनेहु । किन्तु मनोरथ लाभ के अर्थाभावे  
 अनेक दिधि भवान्त मे मोकदमा बापर कय वीजो-यचीला विवाह बाध  
 मुनये हाव मयम मेनेकेहु । बेमयन पितृक प्रसाद मासिकक दरबारमे  
 विवाहप्रमक विपन व्यवक अजियोग मगीलसीन अति पर मनेनर मादेव  
 सीदेक बागन-नक (पावन) अजा पाम कयन । उकीच ठाकर बागमानक  
 हेतु पादे पर पहुँचलाह श्रीव अम-बकेन करन लगलाह किन्तु वीजलजी क  
 कयन हेमि अम-नय मे पयन नी साधय लगलाह अति नी वीजलजीक  
 उपर एक पीन-गान नय जाएत मयम केमानक मोकदमा बागिदर माहेवन  
 हयनाह मे बापर करीनेहु ।

मोकदमा-मयममे मानिकक दरक नी मयमही रसीद दयाह कथान  
 हयदि बागिन कयन मेम । रसीद कयकटी के विनाम कयन, नी विदिन  
 होन अति मे जगू जोलहा जिनकाक विदये जनीन अमादरक मयकटीमे  
 १०) रसी नी जोकरा रसीद मे १००) विनाम रसन बाधन अति । मिट्ट  
 मिटाक मयकटी मे ११) नी जोकरा रसीदमे ११०) रसी । ठगवा रसदेवक  
 मयकटी मे २०) नी रसीद मे १०) रसी किन्तु अकर मे बीजे निजय छैक ।  
 नयनवा महेरिक मयकटी मे ७) रसी नी रसीद मे १३) सागन-दि विनाम ।

दुमैनी हयनाक मयकटी मे २०) नी रसीद मे १०) रसी । एम-नकाह नी वि-  
 गुनि के पीन बाध मयक केमानक बागिन कयन मेनेहु ।

केमानक बागिन मेना पर मयिदर माहेव बागे देवाक मयम मनोरथ  
 लाभ नी गुनेन लयीन वेन जैनस्ट बाध । ठीक ठगवा नी मेम-नीन  
 (मानिक, का बागे विनामके (अपहरण) विना ?

मनोरथ लाभ-हयन बागन-प्रमके दिन मानिक के मानक्यागी नी विनी  
 तरा मे नमकेक मही विना है । मानिक के फल के मुताबिक पटवारी के  
 काम महवीन रखवा नीन कोना । महवीनी कयमे मय निनाम होन-नाने के  
 कनेन नक जेठदेवन के बास मया रहता है । मे ना केवन निजमी बाध है ।  
 रसदे के रसीद ना हयन नी बागे देवन ना जेठदेवन । मे ना केवन अमकटी  
 बागे कयने की अजना । विनाम इसके हयन यह भी मीर कयमाने नि  
 मेने बा मे बीजे बाधनी है विनाक कयन-पावन करन बागना एकमात्र नी  
 ही है । हयन नीन भी अपने मानमाना बागनी, बीज कोर की बाग-  
 पनक कयने मे कयन तो मोजाहुरा न देते हयन मेनिन हम केचने पटवारीनी  
 नी नी नीन पीन बाध के नियम मोजाहुरा पता नी नी अमय नी  
 होन । अमान दगके बाग-न के ऐय्यक मे नी नीन पीन कयने मे एन  
 बागनी नी भी गुनरा दुदवार है । नय बागी बीजे बाधनी नी पटवारी  
 हयना है रसी नीन बाग ना विनाम ही कया है । हय पटवारीनी को लुद  
 बागनी नी नी कयन मेनेहु । नयन अमहरक नीन ना पय दमन होन  
 है । पहले जयने न मयमहुरा के अलावा दमन-नय विनाम मेनेवारी नी  
 पटवारी के निव मानिक देना बा । मेनिन अमकन नी दमान बाग  
 नयनय लुदहरा मया नय नी बाध हो रसी है । एसी हयन न कयन  
 रहमदमा देयावा हम केचने पटवारीनी पर महेवनी न नवीनी होनी ना  
 हम पटवारी याद पटवारीनी के नाम मुने नी नीन ना नी विनी हो मये  
 रहते । हयन नय कयन करमा के बागिनी करे नि एम-नीनी कयन-  
 बागिनी निन हम पटवारीनी ही से रसी हुना करनी है । कने मानिक के

महत्वे महत्कारणों ही के अन्वयमन्दी से होती है, तब रहा 'हनुमा पूरी बीबी लाय, कोस भरन को कान्ही खीर ।'

येहि पर बुद्धि का मुक्तार चलीटा कहानी कह्य तमलखीन्ह कल-कल तुम से काभी कोनहा, बिदू जिवा, बाबा बहेर की रसीद को देखो—जो कि तुम्हारे ही निजाबट और बस्तकत से है, अब कहो कि तुमने तो इन स्त्रियों को तपस्सुख तमर्षक किया । फिर भी तो तुमने इन तमर्षकाली स्त्रियों के लिये तमस्सुख लिखवा लेने के लिये बनेकर लाहेव से अमानी राखत बैठैयत के लालसे सार्ब किया का न ?

मिस्टर काहेव—देन (तब) बस दीनारे कहने से सेल्फ-कन्फेन्स (स्वयं स्वीकार) होटा हान इस बाजे हान डोम को नेशन (दोष) होटा हान ।

मनोरथ काभ—हुयूर हाकिम है जो कुछ करे सो सब कलतिवार है लेकिन इस भोक्हमे मे कुछ भी मेरा कसूर नहीं है ।

बेवाका—क्षिपाही ! इसको बेजर बाबू (कारागारधिवान) के पास बेज से डेल लाय ।

बीरक दमन मे दिवानजीक बनीम थी दया किन्तु अवसर देवाजोन बेनेहि किन्तु दागीदार अक्रियमे गेनाह ।

कारावाकक अभ्यन्तर मे दिवानजीक तनय भी बाबा राखत भूय परि-सोधनार्थ तकाजा पर तकाजा करत-करत बाकि बेज किन्तु परिशोधनक निराशा देखि जेव मे बारब प्रयास ककीलक परामस भी मोकरवा दानि बेमकैन्ह भी गपव-लोड़ पैरवी करेन-करावैत दीवानजीक इकन संपदा निताम-मज्जालाक होम मय्य एक-एक के स्वाहा कय देमकैन्ह । पस्वति पूर्वाहुतिक हेतु बकका घर सी दीवानजी बहरमको कबजाह तौ स्पजाने स्पजाने देखि बकैन्ह । घर कपजाह तौ चरणीक सिबाय केजो सोज पुछारी बर्धेन्ह नहि करैत छैन्ह । एक चुटकी मन्त्र मे बमन करताह से गुप्ताय्य च रह्य छैन्ह ।

बनुबनी पाठक ! येही ठामक कहाऊत किर्कक ।

ममति मरन समाय कय मुक हेरत बनि हीम ।

रजनी औ स्थावित कभी बहहि न सोया दीन ॥

बिबाह दान अनित विपुल अपमयक कारणे जनय समशील स्थिति एक दम्य मुल सीमायक उत्तरा बिबर ही ब्रति दुख-दुर्गति क बन्ध-रूप मे ब्रतिव से गेनेन्ह । तीव्र परिप्रताप भास बशाव् यदि कानो भारतीय जनक द्वार पर पर्यटनो करैत छवि नी ओहिदाम सौ तिरस्कृत मे प्रत्यागत होबक पवैत छैन्ह । तथाम निरावसथ्य मे स्वजातिक म्युन ओबीक धनवान व्यक्ति ओहि कोम स्वतन्त्रात्मक सिद्धान्त बिबाहक बिबेचना करय भर्गेत छवि । सिद्धान्त बिबाहक पूर्व परि नी अन्तिम ओणीक व्यक्ति विमेष रूपे सेवा सम्मान लरमाबेन छैन्ह छैन्ह किन्तु नत्यवधान ओही ओहि देव-दय मदीन छैन्ह तमन पुषकन भरमय पर आश्रय तिर बनि-गुनि पस्वताप करैत अपेक्षनि नी जीवन बाबाक निबाह कयक पवैत छैन्ह ।

ब्रतितयकना दान—अवमयमेन भावनेय कानविकारी गुना गुमन ॥

## षष्ठम परिच्छेद

### द्विरावमान

गमन हमने मगिचगा ।

करब हम कोन सहाना ॥

राख बर्ष पर जाइ बसाहिर लालक इकाम रजत डोकु की पुन अमारक बाभक भवन पर द्विरावमान देखैत छैन्ह । इकाम ठाकुरक पुनरावमानक कारण पाठक-पाठिका क बिबेसे मे वेस हायनेन्ह । कहनांतपुर—मावापूरीक बमनायकम सो टांग होईत-तोईत पांचम बरय मे जाइ अपन अभीष्ट सिद्ध कय रहल छवि । द्विरावमानक शुभ दिवस लकुके सोलहम दिन बीन सुदि हाइसी शुक्ल म्बोहन कयय वेस छैन्ह । बनीक प्रिय पाठक तर्क-वितर्क और मे पवि गेनाह होएत से बीलमे द्विरावमान कोना होयनेक । किन्तु, बिबाहजील पाठक यदि कबेक बीरो बिबाहनि तौ स्पष्टतया विदित मे अप-



सिन्धु के अन्धायक मायक को बर्षा में किन्तु सीधे मातक हिवाले दूधन मेलाक विकेंक । अन्तु सीधेक पच तथा अपन बिदाह-तिहाडक लहिल पलट ठाकुर पुनकिन होइत मनुमोमपुर एकादि अयकाह । विरामयन-दिवा निवेन के । पर छोनेमायक केठ भाव अकाहिर नाम अपन कहल-अयमनाएक पर हाक पुनराहार (अरम्भति) करायन नगलाह अछि । सोफर चाहि दिन की सुमति विरामयनक दिन भागल बेसीह नाहि दिन तो हुनक प्रियतमा मसी चिदुदा भीमनी हितवादिनी हरी इतिदिन एकाला म्भामने बेति-बेति नारी भरी पर नता एककक जोआ देव जामनि अधीन ।

भीमति इतिवादिनी हरी-हृद 'पय-प्यारी बहिनया' भाव नी तो विवाहय नी स्वमुगलय जाति छह । हमरा कम क तो आठ ताहुर दमना हुनक भे जागल । 'ह' कत विमल गृही नारि बहा भाटी, पराधीन तपने मुख नही ।' यद्यपि नोहर नन सुमति बिकतु तथापि हमई नी मोहर अलिख बिकिबोह न किछु न नी धर्म पर जीका हैति किबोह क न गाति क धमक करैत चणह ।

देखत 'हम मभ मायकल अवनः भाना-पदाक भानय (गृह) मे रहैत की अर्थात् मायकाल तमन मयक पाणिग्रहण (विवाह) नहि भेल रहैत अछि नाबले छरि हम मभ म-न-पता, पिनी-पतिवादिनि, भाय-भाइजीक अडीला रीति छी किन्तु मनबोचिह पर जवन ओ तोकनि हमन मभ के दान कय दैत छबि तखन नी हम मभ अपन-अपन पतिक मनुकरी पै जाइति छी । हमरा कमक माय-बाप पिनी-पितृप्राप्ति भाय-भाइजि हीन-भीत मभ परिमिः सुख अर्थात् योग्यतामुवाते सुख देनिहार बिकहा किन्तु स्वामी अवनय मुखक इतर होइत छबि, बिजय भरिमे पतिदेव नी बहि हिनकर पत्नी के जान केओ नहि होइत छैक । पतिक पनि ईइतर बिकबोह किन्तु हमरा मयक ईइतर पतिदे बिकहा । हमरा मयक कर्णय पाप सेवाक अनितिक दोसर कोनो बत, तप तथा यज्ञ कन्द शास्त्रकार नहि सिखलैह अछि । पतिदेवो गृह हरीणाम्) मनु मजदान तो एनेक छरि निवेन कय मेमाह अछि जे-जे बीमाकिनी स्वायीक आज्ञा बिना कोनो उपवासो वन करबि तौ पतिक

जानु के भीम करैत भई-नामिनी होबि । पतिक असांअसे, बाक-पुष्पक अर्थात् मायक मायिनी पत्नी बिकथीन गदर्य मसीहनी कहैत छबि हाइत कभीक धर्म तथा पाप कयक अर्थात् मायक भागी पमियो होइत छबि । अपन पति यदि आन्तर कनाह कुलप कोइ कुकनी कोची नोहर मूह, लागद, मूह तथा मूवाधिराजो होअ तथापि हुनक अवहेला तथा अनादर कोनो अवनय माय कदापि नहि करियैह । बनना बाका कर्मना नी केवल हुनके सेवा-मुपुषा करैत रहियैह । जे पत्नी पतिक नामान भवजाक जोपरन करैत छबि जे ऐति लोकरन मे आनन्य अनेन मानवा नी ओबिलहि छबि किन्तु मरणांतर ममलोकह मे अनेकजक ऐलज मयन करक पदैत छनि । जे अनामिनी निज स्वामी के ठिक पप्रुपुषा नी रमण करैत छाप जे ऐति मय मे कुलकनकिनी, तपुकिनी पै बीजन बपनीन करैत छबि । पारमोकरना मे मय कय पप्रुपुषा नक विवाहिनी कयनि जाइत छबि जे मयभी अतिक लयक हेतु अपन मय कोटि उन्नत पप्रुपुषा कीक के बानक बान मे तिलाजोष कहैति छबि तनिका मनि जयमायन अछलाह अवनय संसार मे दोभार के ओरति । येरेति पानीयसी पतिव्रतिनी पत्नी मरणांतरह जहाँ अमयवप करैत छबि मूह पतिक मुख नी अञ्जन रहि प्रमन-मन्माककाक सहजहा इति मे विधवा पै जाइत छबि । हम हरी जाति बिदा परिधम लहज मे वरमाति प्राप्ति कय कर्कनि छी यदि हम मभ मयक छन अउम छाडि केवल अनियत धर्मवीक पावन करी । हमरा मयक सर्वोच्छेद धर्म-अनादिक मानन करन केवल पतिदेवहीक गद पप्रुपुषा ममना बाका कर्मना नी प्रम क बीक । केवल पतिदेवहीक पाद पदक मेवम-गुजन नी मरुद अमायमि मारि सुमति प्राप्ति करैति छबि । हरी जाति के अमर प्रेम पप्रुपुषा कय केवल पतिदेवहीक प्रेम करत लिखैह अछि, चाहि कारवे पत्नी पतिव्रता कर्तव्यविधि । कहत कोनो हरी आइपि पतिव्रता उपरिधम अतिव्रत विमलना का पुब्रता कहौतक अछि 'माता-पिता, भाय-भाइजि देत कने मामु-ममुर, होत-मान लजन-परिजन अर्थात् जहाँ तक जे मन्ही सम्बन्धी कार्य छे मभ हरी के पति बिदा वरपिहक (मूयहृद) नाप नी अधिक लन बुझि पदैत छरिनि । हरीके पति विदोयक ममान दुख दोसर कोनो नहि होइत छैक । पनि बिना पत्नीक लन, धन, धाम, मूची राख, म्भाम लभ जोक मयाज बुझि पदैत छैक ।

पति विदुषि पत्नी के भोज, रोज समान, भूषण वस्त्रन शोक समान हंसार  
 सब बातोंका समान बीज होइत छैक । स्त्री के निरवधारि मे पतिन सन  
 निरवधारक बान केजो नहि होइत छैक । बिना कान्तक कामिनी बोहने बूझ  
 बैहने जीवक बिना देह, दोषक बिना गेह । बलक बिना हरिता, पक्षक बिना  
 पत्नी, अधिक बिना कवि शिवाकर बिना दिव, चन्द्रक बिना रागिनी । ई  
 पत्र होषि-विचारि मे स्त्री केवल पतिदेवहीक सेवन-भूषण करैति छवि  
 तिनका ऊपर देखी-पितर, श्रुति-भुति सब सत्तु हातुकुल रहित कवीन्द्र ।  
 "एवम पत्नी भवेन्महात्मी पतिव्रतपरायणा स्वयं सर्वमाकेतु स सुखी य धर्मी-  
 भूषण ।" गारी धर्म विद्यादासीमे की बातिका की धुपनी की बुझा मयान्  
 सीनो मरम्या मे हमरा स्त्री कातिक हनु स्वतन्त्रता माह विमल केज अछि ।  
 शान्त-धन्या मे गिताक सुवाकस्या मे पतिन, बुद्धादस्या मे पुत्रक रक्षा मे  
 रक्षसि गेलहुँ अछि । बिना रजनि कोमलि अनी रजनि पीनने पुत्रा न  
 स्त्री स्वाम्याममहंति" । स्वतन्त्र केन भी हय मय विगडि जाइति की तबन  
 पति पिता तथा मातासभ सीन कुल कर्त्तव्य मे जाइत माह । हम मय स्त्री  
 रज्य जाइति की कवन कजह रत्न के नमिन करबाक उच्छा ककरा नहि  
 होइति छैक । देखत माका मुसलीह भौ कहि मजह भक्ति मे 'महानुष्टि  
 बलि पति बिलारी' जिन स्वतन्त्र होइ विवर्द्धि मारी" ॥ अतएव हमरा  
 मय के धार्मिक मयक रजा मयक सुवदा करमर्थ बीक ते हमरा पतिव्रता  
 स्त्री क पर पुरुष सी पद, (मोह) करम परमाञ्जित बीक ।

हमरा मयक बाधा केवल गौन्ध्य भी नहि होइति अछि । केवल  
 नृपतिमे बेभरि ती हय मय विमल पतिप्राण अछि मे मकेति छी । मुन्दरता  
 केवल मुखाशयनहि भी नहि किन्तु मूषहि भी होइति छैक । हय मय यदि  
 बलुन मे धर्मप्राण मे स्वर्गक अनुरम भुषक अनुभव करम बाही ती हमरा  
 सब के परमाश्रयक बीक मे पतिन प्रियतमा बनि हुनक आज्ञानुवर्तिनी होइ ।  
 पति-उच्छाक प्रतिकूल मे कोनो काम्य होइत हो मे विचारियो कय कयममि  
 कर्त्तव्य नहि बीक । कोछायेन मे कोनो दुर्वचनक प्रमाण पतिन प्रति नहि  
 कही अपराधर स्त्री-मण्डली मे ईति ईति पतिन जिन्दा वा हेव कवनक नृप-

करी नहि कोही । एवम सर्वदा अन्त-विता बनि रही तथा पतिन पति के  
 वरस प्रसन्न रक्तवाक प्रसन्न करैति धूम्रभासकुर सी विधुनित तथा बरारिपु  
 नीर मष्टावगुनक अतोधि चिन्ता (प्राज्ञ) करैति रही ।

पति यदि स्वेच्छित वा विनित छवि ती अनेक प्रसन्न तथा विनोद सेवा  
 सुपुषा ती हुनक दुःख बिना के निहोरन कर्त्तव्य । बचन पति परदेस  
 भाषवा बाहुर सी काकल-जाकल अन्तर्गत ती हुनक स्वागत मन्कार मृदुम्बु-  
 भाषण तथा मन्द हासक द्वारा कर्त्तव्य । पूर्वा तथा कर्कशा स्त्रीदन् हुनहन  
 पटपट-सटपट तथा दुर्वचन कहीन स्वाध्याय प्रसाप माह करम जाही ।  
 बचन पति परदेस वा बाहुर बाधि मयन अपन बलीर के विनोद भूषण-वसन  
 भी विधुनित करम परसवन् (विनयक) बीक । भूङ्गाभरण धारण करम ती  
 केवल पान्डीक दीव्यय शोक । स्त्री कातिक मयनकुल धर्माति पतिन  
 होइत छवि अन्तर पति प्रसन्न भौ नवन प्रथम ककर । जे स्त्री पति  
 विनोदनी छवि तिनक जीवन पान्डी विवर्द्धि केवल मयममिन्-बागमी वा  
 महा-नर्गिणी मे करम पड़ैत छैक । विधवा होनु ती मे स्वतन्त्र आदेश छैक  
 जे ओ स्वतन्त्र कारण कवि । कानो बाहुर पर विनर्गिनी नहि ।  
 छैक हाया कर्मा पलन आटादि 'म' धामन माह कवि । काज-उपहन,  
 मय-कुनेल ताम्बूपावि मयान् दीधाम्यजनक काना फलक व्यवहार नहि  
 कवि विधुनित भेल रहि । अतिथिदाये एकहाते मयान् ताम्बूकन  
 कवि । एकमुक्तामे केवल भवतीक रही तथा स्वाध्यायिन्त नृपक मयमम  
 मील मयार्थि । किन्तु देखत माह बाहुर ती हमरा स्त्री जाति के भूषण-वसन-  
 दिव्यान्तक वदाय गेहन नहि गेल छैक जे नृदि सी नृदि अनिक भुष मे दीपक  
 माह नहि माह मे कारी केवल मय पति ज्ञान मे कानि नहि माह मे  
 छिन्न नहि बान मे करमात नहि अर्थात् मय नहि अ नहि मेहो भूषण-  
 वदन्त-काम्यभूषणी करमपुदासी, भवेन्मयाना मयमममम । मनीजुकुला  
 कन्या बरिनी माय्या च बाहुभूषणहीन भुषणी ।  
 बरिपु-मयपान कुमुदति, पति ती भूषण परममय, कुसमय मयन नीर  
 परमहमिनाह ।

मष्टावगुन-माहुर, वपसता, कन्तवरी, लाया, मय, अतिथिदाता मयान, मयाना ।



विवाही श्रीवांगिनी, सुवर्णीक काल-काल समुद्र पर नगर भूति छवि ।  
विशेषकर लक्ष्म कोलो तीर्थ स्थान, उत्तम स्थान का महान-वीरुन लक्ष्मणमन  
करक होयन छवि । वेदि समय पर यदि अपना महिमा रहनें तो  
अर्धविनी-पद्मेगियो भी मणि-वाङ्गि कर सदा के सुविन कर लेती है ।  
हेर । हमरि स्त्री जगति के स्वर्ण-वीर्यक (बोन-वातीक) कंकण किङ्किणि,  
काया, कण्ठभीक स्थान के कायहक हकड़ी बकड़ी मृति-मिहड़ी छी  
मृजलित कर ईन्हि तो कि एकरो वेरि पागीने मणकपीनीहि ? हमरि  
विषया भी जीने मणवाक काय काय नवीन छपीन देवद हक छवि  
छटाक धर पर पावो कनि केने विवाहक मयनोन्त अहि । जोहर  
पारी के कितारी कर्मदार छेनि, पोकी अष्टमी के दिवाली तोल छानी को  
मयने जिरखानो कर मृषण मयानी कोर कर्मक जयन्ती नीम बीच बरबानी  
को । बास बज्जानी मयमाती नवाती लक्ष्म, जीवन मयानी में नुटारी मित्र  
पानी की । बास बिन भिदुर मुहाली पाव पानी मृष पहिने तो गत्र कान  
काटे अहिवालो को ।

हमरा मभ को भी देहन अर्धविनी ब्रामरणा भी शरीरभूषिन कर्मक  
वीर के मज्जना बङ्ग पर को उत्तर नहि पागे मोगन नहि पाव । पुटकी  
पुटकी का विषयको तहि करव । मय मय पर केओ बोटिपो छवि नहि  
करव । अतएव हमरा मभ के परमोचित वीर के मारहो ब्रामरणा तथा  
बोटिपो भू ब्रामरणा स्थान के मारह विवि मोजहो कथा बचनि सदा क्षिप्य

१. १२ ब्रामरणा-१ वेणी (अमरकूल) २ टीका (बाङ्ग टीका) ३ वेमरि (नीम)

४ कण्ठभी (कण्ठमणि) ५ हाव (बज्जहाव) ६ बाबुपन्द (बिबीड)

७ चुरी (बलया) ८ कङ्कण (कमना) ९ मुद्रिका (मोडी) १०

किङ्किणी (पोंकेक) ११ नूपुर (पैरी, मेरु) १२ विरिया  
(बिबिया) ।

२. १६ मृज्जक-अङ्गुलि २ नञ्जम (झाम) ३ अमलवसन परिधान ४  
ब्रामरणा (ब्रामरि) रञ्जन ५ विदुर विरिया (वेमरकडन) ६  
विदु विरिया मात के विदु करव ७ वेमर पर काय

अन, मृज्जक बरामरणा, ईकड-झाम पाक-झामरक झाम, श्री आनन्दिका  
के कोनहो भू मार लपी अन श्री पति के स्वर्ण कर्म रहो अर्धो पति के  
रति-दिमाग के मुलदा हो पति के मय परमि कम मोलम करापी, पति  
के विष करकमल को मज्जना (पाव) मणक रानी, मणि कर्मक हव-भाष  
कटाक्षदि मों उत्तरम हो पति के मुज्जक दि हवा कर्मक वठन मयन  
करपी, पतिक कर्मक अनुसर उत्तम-मयन वैमिक किङ्किटा होइ तथा  
पतिहक संघ लेली, मधुर मवाहर पावक मुज्जिका होइ मय तथा विषमवा  
होइ पतिक दोष के चिन्तमे वृमि नहि छी, पतिक कर्म बचन पर उवासीना  
बननि गही, पति के प्रत्यक काय के मुसवी होइ, पतिक दावारीपिन कव  
पर जोषकका मं विनय रोजका होइ, पतिक अतिरिक्त वामुपक मं हाव  
का मयभी वातनीना कदापि नहि करी, मृज्जक पतिक विमोद केवा-मुधुरा  
करी पतिक मयुव प्रमलजमी मय दावामरि मयनि रही, पतिक मय-  
गिमत मङ्ग-अमरक पादपक पूजम आदरपूर्वक करी । ब्रामरक प्रत्यक  
कर्मिक उत्तम मों कुर्वि मयन-काय के मय करी । परिवारक प्रत्यक  
कर्मिक के बचन-मं न काय तत्पन्न-न स्वयं आहार करी । सन्तानक विमोद  
पावम-मोपन करी । अपरक वीर वस्तुक विरिया कदापि नहि करी ।  
स्वयन्तुक पचामरक पर मयुटा बननि रही । अपन मृह मयन बहुत मोज-  
विषादि तथा मयमयिमार काय मों मय कर्म करी । विषमरक मय  
मय मज्जन करने रही । मृहक मयुवाच के मयम-मियम मों मारी तथा  
विमोद ध्याताकट करने रही । मधुर तथा विष बचन मों परिवार मय  
हव-भाषी के मयुट करने रही । हेर । पतिदेवकीक सेवाचर्म की मय्या

केमरीक लिलक करव ८ विदु (गान) पर लिलक मयम  
६ हाव पैरमे महुदी लमयन १० मरीरान्वाङ्ग अर्धो सुमति  
मयन करव ११ मयका मयन करव १२ मयका मयन करव  
१३ मयका मयन करव १४ मयका मयन करव १५ मयका मयन करव  
१६ मयका मयन करव १७ मयका मयन करव १८ मयका मयन करव  
१९ मयका मयन करव २० मयका मयन करव २१ मयका मयन करव  
(मिती) ।

१. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का अर्थ समझाओ।  
 २. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का अर्थ समझाओ।  
 ३. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का अर्थ समझाओ।

[illegible][illegible]

मन्त्रोक्तं च श्रुत्वा तत्रैव निवृत्तः पञ्चमः ।  
तत्रैव निवृत्तः पञ्चमः ।

नमः पञ्चैतन्मोक्षद्वयं हि त्रिभिर्भवेत् ।  
विचारित स्वगतं च नान्यथा कदाचित् ।

नौवें पंक्ति की प्रत्येक स्तम्भ में एक पाठ्यपत्र है।

सागकोहि लो मेहि सागकोहि एक लोका लैयदाउ मे नयलोहि । लो लो लवन भुवनमे चिकोहि ।

कमल विद्यापीठकी इच्छा निरवरोधे जिलाक जय हारदहि श्रीमती  
समोराज एव सोमराज के नाम पर प्रामदका एव हारद का जय मे लिखु मानी  
अरुम पर जिला प्रेम के अर्थि हारीन्द्र

[illegible]

अद्वितीय, आपसी अनन्त प्रेम, स्पर्श तथा वृत्तमय । न हृदयः शुभं न केशन  
शयक चर्चों के वृत्तमय ।

“इज्जतही कलाने सम्पन्न होवे शकते।

सदाचारियो हय-धुरी। बङ्गाल को लाना ॥  
पायल करि गृह धर्म सभी को सुन पड़वाये ।

कर मे पति के चरण लोचने मूल का कथा ।

मन्त्राले मुक्त रहत वहीं रहणो बर धन्या ॥  
मिराहृर रंग मय कराये रात को भोजन ।

मन्त्री प्रेमचन्द वही शक्ति का सुश्रवण जीवत ॥  
मन्त्र विद्या को दुर्भी कागजों से लिख ।

गन्धी पति के भिन्ने प्येह ही कुनसि हाथर ॥  
 गक शोक ही देह होय बच हथपति ही भिन ।

मनो मानसं पथीरुतसं हृत्पथं तृप्तं चित्तं ॥  
साधनायं वदितुं शक्यं कथं परिहारं सुभाषणम् ।

इमनारा की नाभि दाहिं करिणु महु उल्लस ॥  
 रंग दिखय अरुनोय जगोका करि दिख विमान ॥

॥ कर्म मांसाद्य संयोगात्क तन्मात्रे मूलकमे धीरम ॥  
॥ मा जाते बरि काई ठार पर बनिअ विहायने ।

अथा शक्तिं साकारं कुरु निम्नं चन्द्र विष्णोः ॥  
देवदत्तं अथ साकारं शक्तिं कुरु श्रीश्री शक्ति ॥

करि सेवा सम्मान विनाचे हा शरणी ॥”

[illegible]



सखी से ये-सही फुरस में निगा मारी। डरम पन देस आब नई की उचिनि  
थिक से अपना सगदासि के पुरन धर्म पर किछु शिक्षा दिखीन्ह ।

संभुभाषिणी—प्रिय मनरे ! हमर मनरोलि ली हलै मे नारी मिळार  
प्रवेसिका परीक्षा कलौचर की बखस्य बाँझ और काय मे ली बख्य परीक्षा  
लीचं पाबोपच्छिन मे बाणक छवि । हुनका मन्मुख मे हल यदि कनेका  
अधरोष्ठो उठाय ली मुरम काय छोटय नमताइ । “खोदि-बीछि ली बीछी  
नहुओर हो, मुजा फटी ली नहुओर जो” तथापि अत्रा ममक बाधन ली किछु  
अवश्य कहवैन्ह । अहूँ सभ बनेनि नन हकर कय से सुनिनि रहव ।

धीमती हिनवादिनी कि कि कि जो ली हमरा सभ के अतिनि-कमाय  
होयलाइ । हमरा मोरनि हुनक मन्मुख कोन होयवैन्ह । अमावे सुनिनि ली जे  
पाहुन परम मुनर (भुतफट्ट) छवि को बरीन की जाति देखि ललन ली हम  
सभ केरवें मे जायव ।

धीमती संभुभाषिणी—अबू अबू ! “हमरा मनोहासि सखी बनाबाम्” ।  
जो कि बारी सभक कम्पन मे निजनि रहव । कोयराक वर ली कोन्हुक  
करे भेल जेत छवि बहि मन्मुख बहि होयवैन्ह ली देखि ली सगि के ली  
हमरा सभक दुष्टदुष्ट सुनिनि रहव ।

सकसका—पावनी ! हमर परिजाम करेन करेन नमहु नरी कोय  
सक केरवि पन जम्पुन मेवीन्ह । नकनलर धीमती संभुभाषिणी अवसर मे  
निजेननाम्यमर सेनी २ ली सुमति नयक लाने लान ली कहय जायनि  
छवीन्ह—जो फट्टन ! अहो ली पच्छिनक बेठा महापण्डिते ली । आही के ली  
किछु उपदेशो देव मुरम के दीन देवताय होयत तथापि बिज मनरीक मयल  
निछु कहैक पईन बहि । देखवैन्ह हमरि मनरि मन्मुख अति अवका लव ।  
एक लानक लमिनि लामिनी लली गिकीनि अमरु मे जाहि ली कोनी बातक  
अमोवर्ष नहि हाकिन्ह मे मल करीव रहवैन्ह । आही ली निजेपलमा  
बनिगहि होयव के—जे पति पत्नी पर प्रेम रखैत छवि बर्षति पत्नीक पालन  
करैत छवि से परगदा पत्नी के मातृवन् सुनिनि छवि । पत्नीक-मुकवक

सखी बहि मुरमो किच्छु मुहमिरो रहैत छवीन्ह तथापि सभ विचारि हुनक  
पति परगदा-निगत कयपि नहि होइत छवीन्ह केवल स्वपनिने के प्रेमवाली  
हुनक छवीन्ह । जे पति स्वपत्नी के अर्द्धाङ्गनी जाति विशेष प्रणय करैत  
छवीन्ह हुनक पत्नीको पति के प्राणाधिक प्रीति करैत छवीन्ह । सामान्यमे  
अनन पत्नीक प्रवृत्ति देव मे जाइत छैक और मुनक-जोड़ी अपन-अपन  
कतेवक पालन करैत लीनि कय तयन हुनक लुझाति-मुन अवनो स्वमे मन्द  
मे जाइत छैक । दिनानुदिन मुन-सीताय-मन्मथिनी होय लीन छवि ।  
परगदा पत्नीक कमनीय कान्ति के देखि जाहि पुनक भिन्न कलापमान होइत  
छैन्ह मे नन बखयाय नारी भिकाइ । जे मुन परगदा पत्नी ली प्रवम  
प्राप्ति करैत छवि अकदा अकदा मोहजालमे पडि जाइत छवि तनिक दगा  
देवैत होयवैन्ह जे मोक सभ के हिनवादिनि दय नन नन, धाम के स्वाहा  
करैत ली प्रकाश दुस शोक मलाप के सभेन हार-हार जोषाटन करैत  
किरैत छवि । जाहि नन-धन-आमक द्वारा कर्म कयला ली मनुष्य सकल  
मुक्तक कर्म स्वयमेव प्राप्ति करैत अछि ली कहवैन्ह बिज के बाराहुना  
जो अन्याय कुर्म मे प्रवाहित कय ली प्रकाश रंग-शोक-पायनक कुर्म  
मे हुनक हाइत रहैत छवि । जाहि मुन मे कर्मिनीक आदर मलाप नहि  
होइत छैन्ह मे मुन धी मनु भकवान रहैत छवि जे अहि बामन जाहि ली  
आनु निगट न जाइत अछि और जाहि मुनमे कर्मिनीक अंग पावना  
आदर मलाप बिदाय होइत छैन्ह तहि हुन पर देव पितर कयि-पुनि मर  
सकल मानुसक रहैत छवीन्ह । मे ली, पिता, भाला पति नन देवर्षिक ली  
परम पूजनीय लीकीहि ।

मोचनि कामयोग्य विनम्रताय मकुलम् ।

न मोचनि बारीका बरैत रहि छवेदा ॥

प्रिया न पावहि बेहि ममन मादर अक सम्दाय ।

नो निरवे बहि जात है कहते ननु भगवान् ॥

एही अभ्यन्तर में मन्त्र-मन्त्र हूँसेत विभूषित छह-छह करेनि सोने-मालक  
सारि हृदयहारिणी उपस्थित धनीहु और बहिर्नाई की दु-बारि सकल बारि छौं  
परिधाय कहुन सातसि कधीहु "औं गहना ।" मीठीक शिक्षा ली सुननेहु  
कनक हुनरो सिखा ली यवज में छाग्य कर जोय । अहाँक पुरुष जगति कौं  
उचित चिकीन्ह जे माता भविनी(बहिनी)सका दुष्टिभोज भेट निरन्तर स्वामने  
कदापि नहि करमि, किमेक नौ दुष्टिवादिक भडे कलिष्ट होइति छवि केहेन-  
केहेन, बहना-बहका दुष्टिमान मनमानो कौं क्षीति के पाप पंक में पटक दिति  
छेनि । औ गहना । हब परम भवारि मन्दजानि स्वीकारात कहाँ तक अहाँ कौं  
पुस्त-मिजा नर दीसा देख अहाँ ली स्वयं काव्य में रिक्तसाधार्यक बेटा, जान  
मे कानधसुखीक पीछे चिकीन्ह ।

सोने जाम प्रिये सही सचहि ली स्वभाविक प्रकाश तथा पुरुष जातिक  
मिन्दा कोइबहि में विशेष रूप सौं छोटि रोम । अन्तु बचासाध्य अहाँक  
अनुरोधक कानन सबस्ये नरक किन्तु हमरा अलोच पर अहाँ कमेक रत्ना-दुष्टि  
देने रह्य ।

उचितवक्ता नाम प्रिये वसने । अपने सचहि ली हमरा दुनस्या दुममुच  
होनेजाम कौं अपना-कामा शिक्षा दीआक प्रकलीप भी लोट-लोट कम छोड़स्य  
बहि । अहाँ सगल विषय खरिब प्रसन देबो अहु जगि मर्कन छवि तज्ज  
हमर अलोच आभयक बचने जान ?

राक्षस्य मारि यदपि जर माहीं ।  
सुभगी वाक्य नृपति नक माहीं ॥  
विधिहु न मारि हृदय बलि जानी ।  
सकल कपट अब अवनुच जानी ॥  
मारि विषय नर सकल मुताई ।  
माचहि नर बरकट की बाई ॥

सुखी या अब आइके कोष्ठ न मयो समरस्य ।  
एक कञ्चन एक कुचन पर को न बसायो ह्य ।

भीषय नक न कीन्ह केहि प्रभुता कछि न काहि ।

मृतमयी के मयन बार को भस कानु न काहि ॥

अन्तु ! पूर्वोक्त हास खरिहास, शिक्षा दीआक केकबरक (व्याख्यातक)  
कुलकोई अदेष्ट कय अभातु नर-नारी कर्तव्याकर्तव्य विज्ञाक सम्पूर्ण समय  
मेक नव सोनेलाल सासुर ली सहति अयलाह ।

आह वैत धुदि ठाढ़नी सुखो जाबि देस । विमल राति में मोनेजाल जति  
संकीर्ण कये अभातु बारि बहार एक केगारक सहित हिरामयनक हेतु सासुर  
जाएछ छवि । येहि वक्ता संकीर्णता पर कतोक हमर हुनोइ पाठक पाठिका  
के विस्मय तथा हस्मियो जमेति होमनेहि जे चिनक मिष्ठान्त-विद्या बोहम  
दुष्ट-वास, कम-टाप ली बेसीह, तिनक हिरामयनक बजा देहन सुखमि निर्वक  
होबम जगसेहि ।

पाठक ! सहसोत्पन्न अकलीजपन अन्ध-सुग्ध अपरिमितापव्ययताक प्रति-  
कलो राजा ली रके होइत लोक । अनएव पूर्वोक्त घटना ली हमरा सन ली  
शिक्षा महम कर्तव्य बीक जे "बीती माहि विचारि दे, जाने की सुनि मे ।  
औ जानि जाबे सहम मे साही मे चित दे ॥" अन्तु । येहि उपन्यासक तादिका  
वीनली सुमति एक लक्ष कुल कामिनी तथा विशेष विदुषी चिकीन्हि ते आता  
कमल बाउति अकि जे भविष्य मे ई अपन सहाचार दुष्टिमता तथा दूरदर्शिता  
ली स्वकुल मे एक आदर्श रखपी ली पतिक वक्ता-पतिव अदस्ता के पुनः विभव  
तादिकी बनाम स्वभाव कौं सार्थक करलेहि ।

अब गृह गृहकी बिना ।

नावा स्वस्था दुष्टिताभाव विविनोमनी अवेत् ।

अनवान इन्द्रिय कामो विज्ञान्यमपि नवेदति ॥

आपका पिता पुन उलारो । पुन नमोहर निरन्तर मारी ॥

होव विषय मन नकल न रोकी । जिवि उमिमजि हब रविहि चिकीकी ॥

कति काल विहाक किए अनुधा ।

नहि माकल कोठ अनुधा अनुधा ॥







नामनी देखन साहे तीनिजे नहि-नहि सवे तीन गोटाक छंति बर्षति  
जवाहिर मान, स्वाभी, स्वयं तथा जवाहिर भासक एक बर्ष-तीनिक समय  
सुखीन ।

श्रीमती सुमतिक सुप्रबन्ध सौ सुख-समयक उन्नति आब दिन-दोहर,  
राति-बीवर होबन लगति छेन्हि । आननक प्रत्येक कार्य-विनियोग लगति  
संग श्रीमती सुमति शिशु सुखीनक सेवा सुधूबा आनन-नानन विशेष कवे कम  
रहति छीन्हि । प्रभात-सन्ध्या समयमे स्वयं सुखीन के पढैति छीन्हि ।  
किञ्चित्कालान्तरति मे बर्षमासा, गणित, बस-पाँच स्त्रीच, धूप-मवा मग  
बाचनक स्तोत्र तथा आरुन पुराणादिकक विशेष-विशेष उपयोगी उपाख्यातक  
पारायन स्वरूप करय एक प्राथमिक शिक्षाक पाठशाळा मे प्रतिदिन एक  
घण्टाक संग अध्ययन बढैति छीन्हि जाहि सौ सुखीनक बुद्धि बिकास दिना-  
मुदिन उन्नति कर रहल छेन्हि ।

श्रीभागिनी श्रीमती सुमतिक कार्य-विनियोगताक कारणे सोनेनालक  
सौभाग्यता दिनानुदिन बढैतहाय आगति छेन्हि ।

द्वितीय वर्ष मे श्रीमती सुमति पूर्ण बालमूर्ती केतक प्रचुर उपभोग आय सौ  
पुनः चारि पाँच विग्रहा केत करीद ब्यतीन्हि । प्रतिवर्ष बन्धन केत-पचार  
करीदति जाइति छति । एवम्प्रकारे एक पाँच वर्षाभ्यन्तर मे पचासौ विग्रहा  
भू-सम्पति उपार्जन कयनेन्हि । वेही अभ्यन्तरमे सगवती कालिकक अनुकम्पा  
सौ श्रीभागिनी श्रीमती सुमतिक कोठ (कोर) एक सुन्दर शिशु सौ श्रीभाग्यमान  
बै केनेन्हि । सम्प्रति सुखीन बाबूक बयस नीम बर्ष मे पदार्पण करय चाहैत  
छेन्हि और अबुके दसम दिन प्रवेशिका परीक्षा (इन्ट्रेंस एग्जामिनेशन) देबन  
गटना ब्यतीन्हि । परीक्षा-अनक प्रत्युत्तर पूर्ण रीति सौ सुखीन बाबू दस भाएल  
छति । परीक्षाक प्रतिफल सुनबाक हेतु श्रीमती सुमति प्रति सप्ताह पाठशाला  
भिरौलकक समक्ष पत्रिका पढैति छति । समबोधित पर परीक्षाक प्रतिफल  
प्रकाशित केनेक । समाचार पत्र (गजेट) देखल गेल सौ प्रवेशिका परीक्षाक  
प्रथम श्रेणीक उत्तीर्ण विद्यार्थीक नामावलीमे प्रथम नाम सुखीने बाबूक

बुद्धिबल बेल । केवल पासे नहि (१५) पन्ध्र लीया नास्तिक बुद्धियों सौ  
सम्मानित कयल गेल छति । सुखीन बाबूक विद्याभिलाषक प्रवृत्ति सुनि-सुनि  
आब डेरक-डेर जाति नई हिनक सिद्धान्त-विवाहार्थ लाजाइत होबय मानक  
छीन्हि । पञ्जीकार पर पञ्जीकार आवावाही कय रहल छीन्हि । किन्तु  
श्रीमती सुमति देवी प्रब ठगने छति मे बाबू छरि सुखीन बाबू एम० ए० पास  
नहि करीन्हि ताबत छरि हुनक सिद्धान्त-विवाह कदापि नहि करीबीन्हि ।

पाठक ! ईश्वरानुग्रह सौ श्रीभागिनी श्रीमती सुमतिक सुख सुबोधो आब  
कनेक-कनेक काका-काकी, दादा-दादी, मामा-मानी, बामा-भाभीक भावण  
काल ब्यतीन्हि छति । अपन बाका जवाहिरलालक संग छरि दिन दसकाल  
पर एम्बर-ओम्बर ठेकुनिमा बेल गुडकल पूरैत छेन्हि । विद्याभित भेसा पर  
पितीक पीठिक आश्रय सौ बरधराइत-बन्धराइत डाको भै जाइत छति सगहि  
मे ओषडाय कय सन्धियों पढ़ैत छति । तत्काले कन्दन करय लगैत छेन्हि कि  
मगसे काका कोरा कय बेल छीन्हि । बीर पीठ के सपभारैत एक काल  
सुनसुना हाव मे अराय चुप-चुप-चुप कहय लगैत छीन्हि । सुनसुना हाव मे  
अरैत सन्ता चुप्पो भै जाइत छेन्हि और सुनसुना के मुँह सौ मम्भोरैत छेर सौ  
मेढाय काकाक मुल मे हूँत और दोहराएत-तीतराइत बहय लगैत छेन्हि  
काका बा, काका कीबा, काकाहीबा । जखन विशेष मुल लखैत छैक तखन  
रकम्पा करैत-करैत काका बा, काका बूध कहय लगैत छेन्हि । कबको काल  
पर बड़ान आंगन कय बजैत छीन्हि । दुग्धपानान्तर पुनः बालान विधि  
सत्तरब लगैत छेन्हि । एहि समय यदि जखनी रोकबाक हेतु पाछा-पाछा  
परिचमकों करैत छीन्हि सौ बजति मे छिरिआव लगैत छेन्हि तखन विषय  
बै छोड़ि बेल छीन्हि । जखन अपन भाय सुखीन बाबू के प्रभात समय मे  
पढ़ैत देखैत छेन्हि तखन सुबोधो हुनक दू-एक पोखी के उकटि-पुकटि एम्बर-  
ओम्बर देखि मुल सौ मम्भोरैत छेर सौ सेनबनेत बीया, काका हीराक पाका-  
म्यान् करय लगैत छेन्हि । बन्धन समय मे सौ पटनाभार मे सुखीन बाबूक  
अलगमे सौ पूर्वति जाय बिराजैत छेन्हि और काका-काकी, दादा-दादीक पाठ



सदय समेत अछि । एहेन-एहेन सकित भै छामहि । सबकु पर निभैत निद्रा मे निमग्न भै जाइत अछि मखम जसली छामि सबसि छबीन्ह और एक जस पालन पर मुकाम बेसि छबीन्ह । एकतुक मृतक पुनः प्रभाते काल मे प्रगीत छैन्ह ।

जामन यी सिमू मुनीश के पुरखर चेतय-विहसत भावण जसत जसलैक अछि तसत यी बीसन भांगन मे रहितहि कहि छैन्ह । समसामय बालक संग जसत केलाइत-पुपाइत रहैत छैन्ह । ओहबन सजस पर जसत काका बजसत देतु बजसत बाइत छबीन्ह यी एम्बर-ओम्बर माकल फिरैत छैन्ह । कनेक पोहोइत-मुहोइत पर सिमू समसत छैहि अमरी कसबीन्ह यी अरि देह पर प्रकित बेस जसबीन्ह और जजसत चित यी एम्बर-ओम्बर लकीर हुन्वारि कीर मुल मे गेलकैन्ह और जसबाई पाय पुनः बजसत पर उड़त तजस यी काका धर-धर सटप समेत छबीन्ह कि नरसस काम सससि जात छैन्ह ।

देहि प्रकारक स्वतन्त्र विपुल संस्कारसंस्थाक मुक्तानुगम करैत सोनेजालक परिचार भरिक लोक प्रभुवित बेकल जाइत अछि ।

साक्षात्परत तथा अछत मुनीश बाबूक विशेष प्रयत्न यी बीकनहि दिनक अभ्यान्तर मे सिमू मुनीश शिक्षा कल, व्याकरण, भिन्नविन्न, छन्द तथा उर्ध्वतित मे विशेष समता प्राप्त करम जालन छबीन्ह ।

सीमाविनी श्रीमती मुनसि देवी अत्यधिक प्रमत्ता यी हुनारलेक समसा-उपायन कथ जिख गति सोखेजाल यी वास्तविक प्रकृति यी विमुक्त सससत वर्गसस-व्यापार सससत वससित भेबीहि ससहि व्यापारक प्रसादे श्रीमती मुनसि एकल पचासो हुनार सससित अतिशयकी मे बेसि अछि । योहनाहि दिनमे मुनीश बाबू एम० ए० और मुनीश बाबू अवेसिता पलीका मे सन यी प्रथम संस्था मे परिक्षीकी भेनबीन्ह और मुनीश बाबू एक बीस सससत छात्रवृत्तियो प्राप्त कएलथीन्ह । बाह ! होलितार विरजक मुह-मुह पत ।

सीमाविनी श्रीमती मुनसि आव सस ईरंग अर्थात् विवेचना, कामेयन तथा पुनःपुनः यी विरपुनित मे मुनीश बाबूक सिद्धान्त विवाह तथा समसत मुनार पर

कटिबद्ध मे एक नियमावलीक निर्माण कएलैन्ह अछि और स्वयं प्रतिज्ञाबद्ध भेलि छसि जे जे व्यक्ति नियमावलीक अनुसार काम करबौन्ह । तनिकहि सोइछाम मुनीश बाबू प्रकृतिक सिद्धान्त विवाह करबौन्ह । एम्हर मुनीश-मुनीश बाबूक विद्याभिलाषक प्रभांछा मुनसि-पुनसि हुनकर विवाहार्थ बहुतोय स्वभावि-वर्ष पञ्जीकार पर पञ्जीकार बटक पर बटक, दूती पर दूतीक धुरसस अचास्य लागन छबीन्ह बिलु श्रीमती मुनसि देवी एतवस प्रत्युत्तर देति छबीन्ह जे-जे विचारवान व्यक्ति हुनकर नियमावलीक पालन करलाह उगिबौह सोइछाम हुन मुनीश बाबूक सिद्धान्त-विवाह करबौन्ह । नियमावली मे बहुतोय बालक मुनार उल्लिखित छै ।

ॐ

डा. रघुनाथ झा 'एवम'



## कर्ण गोष्ठी

दूरभाष : 334 9371

६/२८, सी० आई० टी० बिल्डिंग

१६, बागमारी सेन, कलकत्ता-७०० ०५४

## श्री १०८ चित्रगुप्त पूजनोत्सव

आगामी बन्धु,

आदि पुरुष भगवान श्री १०८ चित्रगुप्तक वार्षिक सामूहिक पूजनोत्सव आगामी मंगलवार १२ नवम्बर १९९६ के आयोजित अछि।

प्रातः काल ९ बजे : श्री चित्रगुप्त-पूजन एवं प्रसाद-वितरण

एहि पुनीत अवसर पर स्व० दास बिहारी लाल दास रचित उपन्यास 'सुगति' क नव संस्करणक लोकार्पण मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार सं सम्मानित श्री प्रभास कुमार चौधरीक कर कमल सं होएत।

प्रधान अतिथि रहताह उपन्यासक नवसंस्करण क भूमिकाक लेखक डा० रमानन्द झा 'रमण'।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मोहित ब्रमजोषी हिन्दी विद्यालयक सभागार, ९३ मारिकेत डांग्र मेन रोड, कलकत्ता-७०००५४ (फूल बगान जीरस्ता सं पूरब) मे अनुष्ठित होएत।

समारोहक सफलताक हेतु अपनेक उपस्थितिक आकांक्षी छौ।

विनीत :

रामनन्दन लाल दास

अध्यक्ष

उपेन्द्रनाथ दास

सचिव